हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

हांगकांग
की
हसीना
कृश्न चन्दर

HONG KONG KI HASINA

NOVEL

KRISHNA CHANDER

मूल्य : एक रुपया

हांगकांग की हसीना

बैरे ने आकर मुझसे कहा।

"वह लड़की आपको बुलाती है।"

उसने नाइट क्लब के एक अंधेरे कोने की ओर इशारा किया।

मैंने उधर देखा।

हां, वही तो है।

अंधेरे कोने में अपने काले बाल दायें कंधे पर बखेरे बैठी है। हर रोज़ की तरह सिगरेट मुंह में है। जब कभी वह सिगरेट सुलगाती है, काले बालों के फ्रेम में उसका चेहरा एक क्षण के लिए दमक उठता है। ऐसा मुकम्मल मुखड़ा मैंने कम देखा है। मगर वह मुखड़ा इस वक़्त एक बुझे हुए चांद की तरह नज़र आ रहा है। होंठों के बीच जलती हुई सिगरेट का धब्बा है। सोई-सोई आंखें—

मैं अपनी मेज़ से उठकर उसकी मेज़ पर चला गया।

उसने मुस्कराए बिना अपना ठंडा और ढीला हाथ मेरे हाथ में दे दिया। दूसरे पल उसे खींच लिया। फिर बोली :

"मेरा नाम मे है? तुम?"

मैंने कहा, "तुम मे हो। मैं अप्रैल हूं। अप्रैल जो सदा मे का पीछा करता है। इस कुर्सी पर बैठ जाऊं?"

"बैठ जाओ।" उसने इजाज़त दे दी। फिर पूछा, "मगर अप्रैल तो किसी हिन्दुस्तानी का नाम नहीं होता।"

"पहली बात, तुम्हें कैसे मालूम है मैं हिन्दुस्तानी हूं। दूसरी बात, तुम यह कैसे कह सकती हो कि अप्रैल किसी हिन्दुस्तानी का

नाम नहीं हो सकता ? क्या नवंबर का महीना हिन्दुस्तान में नहीं आता ?"

वह मुस्कराई तक नहीं। जवाब में उसने सिगरेट का एक लम्बा कश लिया। फिर राख और धुएं के सिवा कुछ न रहा। कुछ क्षण के बाद उसका मुखड़ा हौले-हौले धुएं से उभरने लगा। वह खिले हुए होंठ जैसे खून के सुर्ख धब्बे, किसी अपरिचित कामना के क्षण की ओर इशारा करते हुए।

वह सिगरेट की राख झाड़ते हुए बोली, "ठीक है। मत बताओ अपना नाम। मुझे तुम्हारे नाम से कोई दिलचस्पी नहीं है। सच पूछो, तो मुझे तुमसे भी कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"दिलचस्पी नहीं है तो फिर अपने पास बुलाया क्यों ?" मैंने पूछा।

"क्योंकि तुम्हें मुझमें दिलचस्पी है।" वह जरा आगे को झुककर बोली। और किसी अपरिचित सुगन्ध का झोंका बार-बार मेरे नथुनों को छूने लगा। "सात दिन से देख रही हूं। हर रात तुम इसी वक्त नाइट क्लब में आते हो। जब तक मैं रहती हूं, तुम भी बैठे रहते हो। मैं चली जाती हू, तुम भी चले जाते हो।"

तुम्हें कैसे मालूम है तुम्हारे चले जाने के बाद मैं भी चला जाता हूं।"

उसने गौरव से धीरे से अपने सिर को ज़रा-सा हिलाया। 'मैं बहुत कुछ जानती हूं।"

"यह केवल एक संयोग भी हो सकता है मिस मे !" मैंने उससे कहा, "जिस तरह आज से छः साल पहले यह भी केवल एक संयोग था कि मैंने मेकाव के एक नाइट क्लब में तुम्हे थोड़े-से क्षणों के लिए देखा था। मैं अन्दर आ रहा था, तुम बाहर जा रही थीं। तुम मेरे करीब से गुज़र रही थीं। आज से छः साल पहले की बात है। मैं बहुत दुनिया घूमा हूं। मगर ऐसा सम्पूर्ण मुखड़ा मैंने कभी नहीं देखा। ऐसा नादिर चेहरा, यकीन मानिए मिस मे ! मुझे भी आपसे कोई दिलचस्पी नहीं है। अर्थात् आपके व्यक्तित्व से। आपकी

समस्याओं से। आपकी ज़िन्दगी से। मगर जैसे कोई आदमी दूकान में दाखिल होकर कोई क्यूरियो देखता है और उसके अद्भुत अस्तित्व पर चकित रह जाता है, यही उस पहली निगाह में मेरा हुआ था। यानी यह कि दुनिया में ऐसी भी कोई औरत हो सकती है। आजकल औरतें ऐसी होती नहीं हैं। माफ़ कीजिएगा। अगर पिछली सात रातों से मैं आपको देखता चला आया हूं, तो यह बिल्कुल ऐसा है, जैसे मैं जार्जिया की 'सोई हुई जहरा' की तस्वीर को देखता रहा हूं। ऐसी तस्वीर को खरीदने, अपने कब्जे में करने या उसपर हक़ जताने का सवाल ही नहीं पैदा होता। ऐसी तस्वीर या ऐसी औरत सम्पूर्ण होते ही आदमी की पकड़ से आज़ाद हो जाती है। मालूम नहीं, मैं अपना मतलब तुमपर स्पष्ट कर सकता हूं कि नहीं।"

अब वह धीरे से मुस्कराई। उसकी मुस्कराहट में बहुत-से गलत अनुभवों की कड़वाहट शामिल थी। मगर उस कड़वाहट के बावजूद उसकी मुस्कराहट में ऐसी मोहिनी थी, जैसे सहरा में फूल खिले।

वह बोली, "खूब समझती हूं। मर्द जब किसी खूबसूरत औरत से बात करता है तो उसका एक ही मतलब होता है। केवल शब्दों के पैंतरे बदलते रहते हैं।

मैं धीरे से हंसा।

वह बोली, "वैसे अगर तुम केवल न्यूड-आर्ट की बात करते हो, तो मुझे जार्जिया की सोई हुई 'जहरा' से गोया की 'माया' ज्यादा पसन्द है। और माया से भी ज्यादा विलास्को की 'वीनस और क्योपिड।'

"अजीब बात है।" मैंने कहा "विलास्को की, 'वीनस' और गोया की 'माया' मालूम होता है एक ही औरत के जिस्म को देखकर बनाई गई थीं। गोया ने सामने के ऐंगल्स लिए हैं, विलास्को ने पीछे के।"

मैं बोली, "गोया ने अपनी तस्वीर 'माया' डिच्ज आफ़ आलवा

को देखकर बनाई थी और डिचज़ आफ आलवा ही के पास वि
की तस्वीर क्योपिड और वीनस भी थी।"

मैंने पूछा, "मे, तुम एक चीनी लड़की होकर यूरोप की
कला मे इतनी जानकारी क्योंकर रख सकती हो।"

वह बोली, "मैं चीनी नहीं हूं। आधी पुर्तगाली, आधी च
हूं। मेरा बाप पुर्तगाल था। और पुर्तगाल तुम जानते हो स्पे
ज्यादा दूर नही है। जहां की यह दोनों तस्वीरें हैं। और जहां
डिच्ज़ आफ आलवा थी। वैसे मैंने आईने मे बार-बार और
विचारपूर्वक और गम्भीरता मे देखने के बाद यह फैसला किया
कि मैं डिच्ज़ आफ आलवा मे ज्यादा खूबसूरत हूं।"

"काश मैं वह आईना होता।"

उसके होंठ बड़ी गम्भीरता मे धुए के चक्र बना रहे थे।
उसकी आखें मुस्करा रही थी। उसकी आंखों ने अब ज्यादा गहर
से मेरे चेहरे को देखा।

मैंने कहा, "तुम्हारे नाम मे ज़रा-सा फेर करने से मे मैं
सकती है। मुझे मैं-साव चाहिए।"

"मैं-साव क्या?"

"शराब। शराब जो औरत की बहन है।"

"मेरा ख्याल है, मैं तुम्हें कुछ-कुछ पसन्द करने लगी हूं। पह
सात दिनो मे तुम बड़े मूर्ख-से लगते थे। तुम्हारी आंखों के अन्द
कोई अति तीव्र भावना छिपी हुई थी, जिसकी वजह से मैं तुम्हें इत
दिन गवारा कर गई।"

"यानी तुम यह कहना चाहती हो कि तुम भी सात दिन इस
नाइट क्लब के इसी कोने में मेरी वजह से आकर बैठती रही?"

औरतें हर बात को ज्यादा स्पष्ट नहीं करतीं। उन्हें पहेलिय
पसन्द आती हैं, ऐसे मर्द भी जो पहेली हों—जैसे इस वक्त तुम हो
मेरे लिए। एक अपरिचित पहेली···कौन-सी बाइन चलोगे?"

"कोई बहुत ही हल्की और साफ जिसकी निथरी हुई सतह में
मैं तुम्हारे रूप को करीब से देख सकूं। कोई भारी शराब होगी तो

वासना सुन्दरता को डुबो देगी।"

मैंने वाइन का मीनू देखकर एक जर्मन वाइन मूसल का आर्डर दिया। लम्बी गर्दन वाली हरे रंग की बोतल का कार्क खुला। मैं आंखों से मैं और होंठों से मैं पीने लगा।

पहले गिलास के खत्म होने तक खामोशी रही। इस खामोशी का होना बहुत जरूरी था। पहली बार मैं उसे इतने पास से देख रहा था। मगर उस नाइट क्लब में रोशनी इतनी कम थी कि इतने पास होते हुए भी जैसे उसे धुंधलकों में देख रहा था। जैसे वह किसी धुंधलके की सूक्ष्म छाया हो। किसी खुशबूदार सिगरेट के धुएं का चक्र, जो हाथ लगाते ही टूट जाएगा, हवा में घुल जाएगा। मान लो, मैं उसे छूकर देखूं? क्या वह लोप तो न हो जाएगी?

"नहीं हूंगी।" उसने मुस्कराकर कहा। जैसे उसने मेरे दिल के विचार पढ़ लिए हों। "आओ, थोड़ा-सा नाचें।"

वह उठ खड़ी हुई। मैंने दूसरे जाम से दो घूंट लिए और उसके साथ डांस फ्लोर पर आ गया। नाइट क्लब की दीवारें नीले रंग की थीं, रोशनियां मध्यम-मध्यम और हरे रंग की। जैसे सारे वातावरण में मूसल वाइन बह रही हो। इस रोशनी में लड़कियों के सुर्ख होंठ ऊदे नज़र आ रहे थे। मेक-अप अजीब-सा मालूम होता था। संगीत बहुत धीमा था। धीरे-धीरे गुड़ियों की तरह जोड़े हिल रहे थे।

मैं ने हरे ब्रोकेड का चीनी फ्राक पहना हुआ था। नाचते वक्त मैंने उसे बहुत समीप कर लिया। पहले हम दो नाच रहे थे, थोड़े ही क्षणों के बाद ऐसा लगा जैसे मैं अकेला नाच रहा हूं और वह मेरी बाहों में गुम होकर मेरे अंग ही का एक भाग बन गई है। मेरी चार आंखें थीं, चार बाहें, चार टांगें और एक दिल जो ड्रम की ताल पर धड़कता था। अगर पार्टनर अच्छा हो तो नाचते वक्त आदमी आनवर नहीं रहता, समुद्र बन जाता है, जिसमें लहरें उठती हैं। मैं एक लहर की तरह मेरे साथ उठती थी और गिरती थी और वह समुद्र का एक भाग थी। फिर म्यूज़िक खत्म हो गया और मैं उसे लेकर बाहर टैरेस पर आ गया।

हमारी नाइट क्लब ग्यारहवीं मंजिल पर है। टैरेस से हांगकांग दिखाई देता है। पहाड़ी टैरेसों पर मकान एक-दूसरे के उठे हुए, रोशनी के मोतियों की मालाएं पहने हुए। सीढ़ी-ब किसी गुप्त महारानी की गर्दन में लिपटे रोशनियों के गुलूबन्द तरह। बेशुमार चमकती हुई बिल्डिंगें। और समुन्दर में ह छोटे-छोटे डोंगे और बजरे और किश्तियां और कोलोन में एक फुलझड़ी की तरह बहता हुआ मोटर-ट्रैफिक। जब हाथ में कमर में हो तो हांगकांग बहुत खूबसूरत मालूम होता है।

एकाएकी वह सिर से पांव तक कांपी। धीरे से बोली, "च अन्दर चलें। मुझे इस वक्त सर्दी लग रही है।"

हम वापस अपनी मेज़ पर आ गए। इस वक्त डांस फ्लोर कोई बीस जोड़े नाच रहे होंगे। नाचने वाले मर्द भी यूरोपि मैंयाह थे। औरतें मिश्रित रक्त वाली यूरोपी चीनी हसीनाएं मलमली फ्राक पहने पीले मरमर जैसे चेहरे लिए। कोमल बदन सुमन। चुप चेहरे, थोनने बदन। लाड की गुड़िया, केवल पचहत्त डालर। (हांगकांग का डालर लगभग बारह आने का होता है)।

"वास्तव में यह बहुत उम्दा वाइन है।" मैंने उससे कहा, "तुम्हारे व्यक्तित्व की तरह इसमें भी एक अजीब गरिमा और गम्भीरता है। इसकी महक उस खुशबू की तरह है जो तुम्हारे बदन से आती है। इसमें तुम्हारी आंखों की रोशनी है। इसका स्वाद उन होंटों की तरह है जो मैंने अभी नहीं चखे।" मैंने उसके होंटों की ओर देखकर कहा।

वह बोली, "मूगल दरिया के किनारे बील एक गांव है। यह वाइन वहां की है। हांगकांग की भांति ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों की टैरेसों पर अंगूर की बेलों के बाग में, जमीन की मिट्टी में स्लेट और सोडम की अधिकता है जो इस वाइन को एक विशेष प्रकार की गम्भीरता प्रदान करती है। यह वाइन फ्रांसीसी मर्द की तरह नहीं बहकती, इसमें जर्मन औरत का डिसिप्लिन है। मैं मूसल वाइन को बहुत पसन्द करती हूं। एक सौ साठ हांगकांग-डालर में एक बोतल

आती है। इतने में तुम नाइट क्लब से दो लड़कियां खरीद सकते हो। यह इस सभ्यता की ट्रेजडी है कि औरतें बोतलों से सस्ती हैं।"

पहली बार वह ज़रा खुलकर हंसी—बिजली की तेज़ी थी उस हंसी में और शमशीर की चमक। उसने अपना आधा सिगरेट मेरे मुंह में दे दिया। बोली, "जब तक तुम्हारे होंठों को कोई श्रेष्ठ चीज़ न मिले, इसीसे दिल बहलाओ।" उसने इतना कहकर अपने लिए एक नया सिगरेट सुलगाया। मूसन्न की दूसरी बोतल मंगा ली। "तुम अपने वतन में क्या करते हो?" उसने मुझसे पूछा।

"बिल्डिंगें बनाता हूं। यानी कागज़ पर उसके डिज़ाइन और रूप-रेखा बनाता हूं।" मैंने जवाब दिया। "और तुम?"

"मैं भी बिल्डिंगें बनाती हूं।" वह बोली, "मगर शब्दों की बिल्डिंगें, शब्दों की झोंपड़ियां, फ्लैट, बंगले और महल। सपनों की तरह खूबसूरत और झूठे। मर्दों की तरह मक्कार और बेवफा। औरतों की तरह दिलकश और बिकाऊ।"

"अच्छा, मैं समझ गया। तुम एक साहित्यकार हो या कवयित्री।"

"गलत।"

"तो फिर किसी पोलिटिकल पार्टी की लीडर।"

"वह भी नहीं।"

"तो फिर—?" मैं हैरान होकर बोला, "तुम क्या काम करती हो?"

"मैं एक विज्ञापन-सम्बन्धी कम्पनी में नौकर हूं। इश्तेहारों के खाके तैयार करती हूं मार्स्डन एंड मार्स्डन में। तीन हज़ार डालर हर महीने, एक फ्लैट कम्पनी की ओर से। एक कार, पेट्रोल और माकूल खर्च का खाता...आज की वाइन उसी अकाउण्ट में जाएगी।"

"तो गोया आज का बिल मुझे अदा नहीं करना पड़ेगा।"

"इस मेज़ पर तुम मेरे मेहमान हो।"

"शुक्रिया।"

फिर एक लम्बी खामोशी। मैं सिगरेट से खेलता रहा। वह कभी टुकड़ों में या जाम के कांच की सतह में या अपने नाखूनों की कोर से।

"तुम्हारी शादी हो चुकी है?"

"तीन बार तलाक ले चुकी हूं। पहला एक जर्मन था, दूसरा एक चीनी, तीसरा एक अमरीकी था। मगर तीनों से तलाक ले ली। मर्द रास नहीं आए। औरतों पर किसी उपनिवेश की तरह दमन करना चाहते हैं। उसके नाखूनों की आखिरी कोर तक उसपर कब्ज़ा करना चाहते हैं। मगर मैं एक आज़ाद औरत हूं। मेरी अपनी एक हस्ती है। अपनी एक ज़िन्दगी है। अपने विचार और भावनाएं हैं। मैं खुद एक पति हूं। मैं किसीकी पत्नी नहीं बन सकती।"

"क्या उन तीनों में से किसीने तुमको पीटने की कोशिश नहीं की?"

"उन्होंने हर मुमकिन कोशिश कर ली।" से ने मुझे अपने सीधे बाज़ू की कोहनी दिखाई जिसपर एक घाव का निशान था। "मगर मैं उनकी बराबर की थी। बुद्धि और सूरत में उनसे अच्छी। चालाकी में लगभग उनके बराबर। दो बार मेरे फ्लैट में घुसकर मेरी इज़्ज़त लूटने की कोशिश की गई। दोनों बार मैंने उन्हें पिस्तौल से मार दिया। अखबारों में आया था। मैं बहुत बदनाम औरत हूं हांगकांग की। मगर अपनी आदत से मजबूर हूं। जाने मेरी सुन्दरता में क्या बात है, लोग मुझे देखकर पागल हो जाते हैं। मुझे चिकन की प्लेट समझकर खाना चाहते हैं। मूर्ख!"

मैंने जल्दी-जल्दी दो जाम पी लिए। क्योंकि मुझे क्रोध आ रहा था उसपर। अपना क्रोध छिपाने के लिए मैंने उससे कहा, "आओ नाचें। इससे अपरिचितता दूर होती है।"

तो वह मेरे साथ उठकर फिर नाचने लगी। मगर इस बार आनन्द नहीं आया। धुन से धुन और लय से लय नहीं मिली। धुरी अलग, संगीत अलग और उस संगीत की समझ अलग। जैसे हम दो टापू थे और बीच में एक समुन्दर आ गया था। अब उसकी सुन्दरता मेरी दुश्मन थी। वह दुश्मनी उसकी निगाह में थी। उसकी हर

ांस में, बदन की हर हरकत मे मेरे लिए दुश्मनी थी। बड़ी मुश्किल से वह आइटम खत्म हुआ और मैं उसे फिर बाहर टैरेस पर ले गया। हवा तेज और ठंडी थी। होले-होले मेरा क्रोध ठंडा पड़ता गया। और उसके जिस्म का अनुभव मेरे बदन में उमरता गया। और उसके बाल उड़-उड़कर मेरे कन्धों पर आते गए और उसने कहा, "मुझे चूमो।" और फिर वह मुझसे चिमट गई। अब वह जाजिल की वीनस थी और मोया की माया। या जैकब तिन्तुरेलो की भावना-वश किन्तु संघर्ष करनेवाली स्त्री, जिसका दिल पिघलता है मगर जिस्म विरोध करता है। हर मुहब्बत मे एक तरह की दुश्मनी छिपी होती है। हर मुहब्बत एक समझौता है। मर्द और औरत की विरोधी शक्तियों को एक जला देने, भुलसा देनेवाले अंगारे की तरह लाल और गरम क्षण के लिए।

पर हम दोनों अलग हो गए। वह बेमुध-सी नजर आई। मगर यह मेरा भ्रम था। क्योंकि उसके दोनों हाथ अभी तक मेरे कन्धे पर थे। उसने मेरी आंखों में देखकर कहा :

"तुम्हारी कीमत क्या होगी ?"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि हांगकांग में एक हजार से ऊपर नाइट क्लब होंगे। हर नाइट क्लब मे दो-तीन दर्जन के करीब लड़कियां बिकाऊ होती हैं। इस हिसाब से हांगकांग मे हर रात सिर्फ इन एक हजार नाइट क्लबों के द्वारा बीस हजार से ज्यादा लड़कियां बेची जाती हैं। रात-भर के लिए। उन बीस हजार लड़कियों के जवाब मे एक लड़की तो ऐसी होनी चाहिए, कम से कम एक लड़की इस पूरे हांगकांग मे, जो मर्द को खरीद सके। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह जिस तरह तुम औरत को खरीदते हो। इसलिए अपनी कीमत बोलो।"

वह अपना पर्स टटोलने लगी।

मेरा चेहरा फिर लाल होने लगा। रक्त तेज आंच देने लगा। मैंने कहा, "मैं हण्टर मार-मारकर तुम्हारी खाल उधेड़ सकता हूं।"

[illegible] खिलकर हँसी। एक मादक, नशे में डूबी, आत्मविभोर और मस्त हँसी। बनावटीपन की सतह पर तैरती हुई आकाश में गुम होती मुसकराहट हँसी—उसने अप[illegible] से एक कार्ड निकाला और मुझे देकर बोली :

"कोई जल्दी नहीं है। सोचकर अपनी कीमत बता सको आज नहीं कल सही, परसों सही— दो बरस बाद सही। मगर मैं एक रात के लिए। मैं तुम्हारा इन्तजार कर सकती हूँ।"

उसने कार्ड मेरे कोट की जेब में डाल दिया। मैंने तेजी से द हाथ अपने कन्धों से झटक दिए और चुप बड़े-बुझे कदम टैरेस गुजरकर नाइट क्लब के आखिरी दरवाजे से बाहर निकलकर सि से नीचे चला गया। टैक्सी में बैठा। कोलून पहुँचा। होटल के क म जाकर सोने की कोशिश की। नींद नहीं आई। फिर कपड़े पह कर बाहर निकल आया। देर तक कोलून की सड़कों और बाजा में घूमता रहा। उसकी इतनी हिम्मत? उसकी इतनी हिम्मत?" क्या समझती है अपने-आपको?…मैं और उसके करीब जाऊँ एक लाख और एक करोड़ बार धिक्कार है उसकी सूरत पर…

देर तक अपने-आपसे उलझता रहा। उसके ख्याल और कल्पना से लड़ता रहा। रात गहरी और ठंडी, उदास और अकेली होती गई। वातावरण में सन्नाटा दौड़ने लगा। सड़कें सुनसान होने लगीं। बोझल, थकी हुई हवा मेरे कन्धों पर झुककर हौले-हौले आहें भरने लगी। मुझे अब वापस होटल आना चाहिए। एक बजने वाला है।

"ए टैक्सी!"

मैंने सामने से गुजरती हुई एक टैक्सी को हाथ के इशारे से रोका। टैक्सी में बैठकर जेब टटोली। जेब से कार्ड निकालकर उसे गौर से पढ़ा और और टैक्सी वाले से कहा :

"मुझे आना-वाय स्ट्रीट ले चलो। हाउस नम्बर ८६। मिस क्रिस्टीना से चुग।"

आना सिंग के बाल मर्दों की तरह कटे हुए हैं। उनके पतले गुलाबी होंठो पर लिपिस्टिक नहीं है। गहरे नीले रंग की जींज और बंदे और आसमानी रंग का खुले कालरों वाला ब्लाउज पहने वह बड़ी कसरती और तन्दुरस्त लड़की दिखाई देती है। उसके बदन से खुले मैदानों की खुशबू आती है। आंखों में एक गम्भीर चमक है। वह हांगकांग की मशहूर ऐथेलेट है।

उसका ब्वॉय-फ्रेंड एक दुबला-पतला अंग्रेज लड़का है। आंखों पर ऐनक, मूछें उजड़े, बढ़ी हुई दाढ़ी, गर्दन पर मैल की तहें जमी हुई, मैली खाकी कमीज, मैली ग्रे पतलून, पांव में चप्पल, हाथ में एक घिसी हुई गिटार, बाल बढ़े हुए। दुनिया, खुदा, समाज, परलोक, मानवता, प्रेम, रुपया, सहानुभूति, शराफत, रीति, जुर्म, दण्ड उसका प्रतिफल, दोस्ती दुश्मनी, धन, बदसूरती, जायदाद, हुस्न, हर चीज और हर कदर से वह बेज़ार, इस पीढ़ी को कहीं चैन नहीं है। बड़े जहांगर्द लोग हैं यह। इन्हें केवल गिटार के स्वरों पर गाए गए कड़ुवे गीतों में शांति मिलती है। किताबों से घृणा है। क्योंकि किताबें भी झूठ बोलती हैं। पूंजीवाद के यह दुश्मन हैं। समाजवाद की पाबन्दी इन्हें गवारा नहीं। शादी मूर्खता है। औरत एक बहुत बड़ी मूर्खता है। विक्की ये बाईस वर्ष की आयु में लन्दन से चला था। छः साल में वह हांगकांग तक पहुंचा है। यहां से वह जापान जाएगा। जापान से अमरीका, अमरीका से दक्षिणी अमरीका, दक्षिणी अमरीका से कनाडा, कनाडा से ग्रीनलैंड, ग्रीनलैंड से वापस इंगलैंड। उसका इरादा अपनी पचासवीं वर्षगांठ पर लन्दन पहुंचने का है; अगर उस वक्त तक लन्दन या वह जीवित रहा। मगर उसका ख्याल है कि उससे पहले प्रलय आ जाएगी और अगर न आई तो उसने अपनी गर्ल-फ्रेंड कोन्स्टेन्स को डेट दे रखी है। वह अपनी पचासवीं वर्षगांठ पर गिटार बजाता हुआ ट्रेफा लजर स्क्वेयर में प्रवेश करेगा।

कोंस्टेंस उसके इन्तज़ार में 'वेटिंग फार गोडोट' की तरह खड़ी मिलेगी। वह दोनों उस वक्त हाथ में हाथ थामे चले जाएंगे किसी

गिरजाघर की ओर, और उसी दिन शादी कर लेंगे अगर उन दि
तक गिरजाघर सुरक्षित रहे तो। अभी तो छः साल ही बीते हैं
कभी-कभी कॉन्स्टेंस का मन उसे आता है। वह उसकी बाट देख र
है। वास्तव में विक्की का खयाल है कि उसकी यात्रा एक तरह
कॉन्स्टेंस की यात्रा है। या फिर उसकी भी यात्रा है तो कॉन्स्टेंस
खोज में है। वह कॉन्स्टेंस मांस और हड्डी की नहीं, भीत की
आस्थे और गालों के गुलाबी गड्ढे लिए ममता-भरी कॉन्स्टेंस। पु
उसकी खोज नहीं कर सकते शादी करके। कॉन्स्टेंस की खोज कभी
होगी कॉन्स्टेंस से दूर रहकर। किसी अपरिचित देश में कि
अपरिचित लड़की की बाहों में। बेवफा गिटार के स्वरों में, वह
हुए क्यहर्वबर्गद की कविता का एक छन्द सुनाता है।

मुझे हवाले कर दो, शफाक क्वार्ट्स के
हवाले कर दो चमकती सनों के, रंगों के हवाले, हरे समुन्दर
के हवाले।
हवाले घास को। नील गगन को।
और जब मैं मानव जीवन में जकड़ लिया जाऊं तो।
कोमल समूर को छू लूं।

वह आना की सुडौल बाहें छूता है। और कॉन्स्टेंस को प्राप्त
करता है। उसके गीत में एक विचित्र करुणा है। उसकी पूरी पीढ़ी
पागल है। किसने पागल किया है इन लोगों को? यह सिलसिले
बिना लंगर के बेचैन कहां-कहां मारी फिरती हैं। कोई बन्दरगाह
नहीं है इनके लिए। और कोई गोद खुली नहीं है इनके लिए। और
किसी समुन्दर का पानी काफी नहीं है इनके लिए। विक्की पचास
वर्ष तक अपनी कॉन्स्टेंस को खोजता है अर्थात् पचास वर्ष तक
अभी ही बिना घर चलना है। मुझसे कहता है, "मैं पचास वर्ष की
आयु में वापस लन्दन पहुंचूंगा, शादी करने के लिए। याने गिरजा-
घर में मरने के लिए···ओ कॉन्स्टेंस—ओ कॉन्स्टेंस···"

यह है बाज की मूर्ति।
यह है माडर्न बार।

और नवीन नृत्य।
क्या कहते हो कवि।
ऐसे दुख-भरे स्वर में।
क्या कहते हो ?
त्रिक्की को खुद मालूम नहीं है। उसने गिटार हाथ से रख दी
और आना के दोनों हाथ अपनी आंखों पर रखकर रोता है,
कि उसे कुछ मालूम नहीं है कि वह क्या कहता है। मुझे
रोशिमा याद आता है। एक पूरी पीढ़ी का वजूद भक से उड़ गया

मे का घर एक मन्दिर की तरह बना हुआ है। एक ऊंची पहाड़ी
ान पर। नीचे अंधियारे समुन्दर की खाई है। मे का घर
ड़ी और खुली हुई सीढ़ियों से शुरू होता है। ऊपर जाकर एक
ा कमरा है। कमरे के बाहर नीचे की चट्टानों से बेलें आती
कुछ राक-गार्डन की झाड़ियां उगी हैं। कुछ खुशबूदार फूलों के
ले हैं। नीचे रास्ते रोशन हैं। मकानों की खिड़कियां रात के
धियारे में किसी बूढ़े दार्शनिक की ऐनक की तरह चमकती हैं।
वे अंधियारे समुन्दर में गरीबों के छोटे-छोटे डोंगे कमज़ोर
जुओं की तरह झिलमिलाते हैं। हवा में नमक और नशा तम्बाकू
र पसीना और करीब बैठी हुई मे के बदन की महक। मे की
त्मा भी उसके घर की तरह कई मंज़िली है। हर मंज़िल पर एक
मरा है। हर कमरे के बाहर एक टैरेस है। अभी तो मैंने सिर्फ
ला कमरा देखा है। मगर मे बहुत रूमानी मालूम होती है।
अब इस वक्त तो मेरी-उसकी सुलह हो चुकी है। लेकिन कोई
घण्टे पहले जब उसने घंटी की आवाज़ पर मेरे लिए दरवाज़ा
ला था तो मुझे देखकर कितनी क्रोधित हुई थी।
"अब आए हो, जब मैंने तुम्हारे बजाय तुम्हारे ही एक देश-
सी को खरीद लिया है।"

त में शिल्पविद्या की शिक्षा प्राप्त कर चुका हूं। पुराने, शरीफ़
दान से हूं। कोई बाज़ारी'''।"

"फिर भी दो सौ डालर बहुत हैं। वह मीर जानी तो सिर्फ़
 डालर में आ गया।"

"अरे वह स्मगलर ?" मैंने कुछ गुस्से से कहा, "उसका-मेरा
 मुकाबला ? मैडम माल माल में फ़र्क होता है।"

अब मुझे अपने-आपको बेचने में मज़ा आने लगा था। ऐसा
ता था जैसे मैं अपने-आपको नहीं बल्कि मोज़े की जोड़ी, चमड़े
 जूता, या एल्यूमुनियम का जग बेच रहा हू।

"फिर भी यह कीमत बहुत ज़्यादा है।" मे ने बड़ी कठोरता से
।

"मैडम आजकल हर वस्तु के दाम बढ़ गए हैं। बाज़ार में चीज़ों
 भाव पूछो। महगाई का क्या हाल है। जो कपड़े मैं पहने हुए हूं,
 शिक्षा मैंने प्राप्त की है, जो पुर्ज़े मेरे दिमाग में फिट किए गए
 उनको देखते हुए यह कीमत हरगिज़ ज़्यादा नहीं है। मेरा तो
ाल है, मुझे तीन सौ डालर डिमांड करना चाहिए।"

"फिर तुमने दो सौ क्यों डिमांड किए ?" मे ने पूछा।

"इसलिए कि आज रात जब मैं होटल मे वापस पहुंचा तो मेरे
 में से दो सौ डालर गायब थे। इसलिए तुमसे दो सौ डालर
कर मुझे तो एक पैसे का लाभ नहीं होगा। बस घाटा पूरा होगा।
सो न किसी तरह'''। मैडम इससे सस्ते दामों तुम यह सौदा कभी
सिल न कर सकोगी। यह लास्ट चास है। डेढ़ सौ डालर,
क—डेढ़ सौ डालर, दो—डेढ़ सौ डालर—"

"तीन।" वह बोली और फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी। और
रे कंधे पर हाथ रखकर बोली।" तुम आ गए, बहुत अच्छा किया
मने। वह मीर जानी मुझे बहुत बोर कर रहा था। तुम्हें अपने-
पका सौदा करना कैसा लगा ?"

"इस वक्त तो मैंने इसे मज़ाक में ले लिया। मगर वाकई—
गर कभी अपने-आपको यों बेचना पड़ जाए, तो इससे ज़्यादा

"गीत गाओ।" आना उससे हुक्म देनेवाले स्वर में कहती है। मुझे अभी नींद नहीं आ रही है।"

विक्की गिटार परे रख देता है। उसकी नींद-भरी आंखों में बरता की एक चमक पैदा होने लगती है। वह बड़े अहम-भरे स्वर कहता है।

"विक्की को आज तक किसीने हुक्म नहीं दिया है। कोन्स्टेन्ग भी नहीं।"

आना का घूसा इतनी तेजी से उसके पेट में पड़ा कि मैं एकदम रुक गया। एक, दो, तीन, लगातार तीन घूसे। विक्की बेहोश हो गया। उसे हाथ उठाने या विरोध करने का टाइम भी नहीं मिला।

मे इस पूरी घटना को बिना किसी सम्बन्ध के यों देखती रही जैसे सिनेमा देख रही है। मैं आश्चर्यचकित था। मगर मे अपनी जगह से हिली तक नहीं। पनीर का एक टुकड़ा मुंह में डालकर ली।

"इसे ऊपर तक पहुंचाने में तुम्हारी मदद करूं?" मे ने आना से कहा।

"नहीं। बिचारा बहुत हल्के वज़न का है।" आना ने झुककर बेहोश विक्की को हाथ से खींचकर अपने कंधे पर लाद लिया। मे ने विक्की की ऐनक, जो फर्श पर गिर चुकी थी, बड़े इतमीनान से उठाकर आना को दे दी। आना ने वह ऐनक और वह गिटार दूसरे हाथ में संभाल ली, दूसरे हाथ से विक्की को अपनी पीठ पर लादे हुए चली गई। टैरेस से उसे मैंने अन्दर के कमरे में जाते हुए देखा। वहां से कमरे के बाहर की सीढ़ियों से ऊपर की सीढ़ियों की तरफ जाते देखता रहा।

"बहुत जी चाहता है," मैंने प्रशंसा-भरी निगाहों से आना की तरफ देखते हुए कहा, "कोई हमें भी इस तरह घूसा मारकर लादकर ले जाए।"

"थोड़ा-सा जूडो मैं भी जानती हूं।" मे ने बड़े रेशमी स्वर में मुझे सूचित किया।

[illegible]

[illegible]

"कैसे?" मैंने पूछा।

"तुम्हारे देश में कैसे मुहब्बत की जाती है?" मैंने पूछा।

"हमारे देश में मुहब्बत नहीं की जाती।"

"फिर क्या करते हो तुम लोग?"

"हम लोग सिर्फ शादी करते हैं।"

"उसके बाद?"

"उसके बाद बच्चे पैदा करते हैं।"

"उसके बाद?"

"उसके बाद बच्चों की शादी करते हैं।"

"उसके बाद?"

"उसके बाद हमारे बच्चे अपने बच्चे पैदा करते हैं, फिर वह अपने बच्चों की शादी करते हैं, तो उन बच्चों के बच्चे के बच्चे..."

"ठहरो। खुदा के लिए..." मैं हंसते-हंसते बोली।

"मिस मे चुंग, अब मैं रुक नहीं सकता। क्योंकि अगर हम वाकई मुहब्बत करते, अगर हमें सचमुच अपने या अपने जीवन-साथी में स्वास्थ्य, आराम, सुन्दरता और शान्ति का ख्याल होता तो क्या हम आज पचास करोड़ होते? और तुम लोग सत्तर करोड़? चीन और हिन्दुस्तान की गहरी घृणा और लड़ाई के बावजूद यही तो एक समस्या है जिसपर दोनों देश सहमत हैं। बच्चे पैदा करते हैं..."

"मुझे राजनीति से बहुत घृणा है।" मैं बोली, "मेरे घर में आइन्दा कभी राजनीति की चर्चा न करना। वरना इसका परि-[illegible] से बुरा होगा।"

"सॉरी।" मैंने कान पकड़कर तोबा की।

एक लम्बी खामोशी—धीरे-धीरे सामने के पहाड़ पर बहुत-सी
रोशनियां बुझ चुकी हैं। नीचे का समुन्दर ज्यादा तारीक हो गया
ज़िन्दगी के भयानक संघर्ष से उकताकर गरीब लोग अपने-
अपने बिलों में घुस गए हैं। जिनके पास सब कुछ है वह भी बेचैन
। सारी दुनिया पर एक रहस्यमय भाप या कोहरा छाया हुआ है।
क्या सूरज निकलेगा ? रात के आखिरी क्षण बहुत बोझिल और
पीड़ित कर देनेवाले हैं। मैं एक-एक क्षण को समुन्दर में गिरता
हुआ देख सकता हूं। पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़ों की तरह वह क्षण
गिरते जा रहे हैं और अंधकार में गुम होते जा रहे हैं।

वो मेरे कन्धे से लगी हौले से कहती है, "हालांकि मैं कर
सकती हूं। मगर मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूंगी मुहब्बत करने पर।"

वह मेरे कन्धे से लगी बैठी है। अपना सारा बोझ मुझपर
डाल दिया है। उसके स्वर में निद्रा-सी है। बनावटी सभ्यता के
सारे बन्धन जैसे एक-एक करके उसकी आत्मा से कटकर गिर पड़े
हैं। अब वह केवल एक औरत है—एक औरत जिसके लिए आदमी
ने जन्नत को छोड़ दिया था।

दूसरी मंजिल पर एक खिड़की खुली है। रोशनी की फुहार में
दो चेहरे खुश और मगन नज़र आते हैं। औरत नीचे झांककर
कुछ कहना चाहती है कि मर्द अपना हाथ उसके मुंह पर रख
देता है। और गिटार के तार छेड़ता है।

दर्द का सारा इतिहास,

एक खाली दरवाजा और एक चिनार का पत्ता।

मुहब्बत।

झुक जानेवाली शाम और दो रोशनियां समुन्दर के ऊपर टिम-
टिमाती हुईं।

......।

आह!

"तारे डूब रहे हैं। भोर का पहला जेट हाथ काम की छोटे-से

गगन-गोई से ऊपर उठ रहा है। मैं मेरी बाँहों में ए
नाच गो रही है। सुबह हो रही है।

यास्मीन क्लब में बहुत रोशनी थी। इतनी रोशनी कि
क्लब में नहीं होती। सजमें अमीर और ठाठदार आद
थे। चारों ओर मनोरंजनक चेहरे और अंगूठियां जगमग
तमाशाई अपनी दुनिया छोड़कर डान्स फ्लोर के चारों ओर
रहे थे।

लोग अपने कीमती लिबास का ख्याल किए बगैर
चारों ओर घेरा डाले घुटने टेककर या आलती-पालती मारे
जिन्हें बैठने की जगह न मिली थी वे पीछे खड़े थे और मर्जी
नाभि-नृत्य देख रहे थे।

यास्मीन क्लब के प्रबन्धकर्ता ने एक भारी रकम खर्च
मर्जीना को काहिरा से बुलाया था। बेले के सिवा यूरोपी नृत्य
कम कहता है। और जो कुछ वह कहता है, वह बहुत ठंडा
बल्कि जमी हुई हालत में मिलता है। यूरोपी नाच यूरोप की ब
वातावरण की पैदावार है। इधर पिछले पचास वर्ष में मध्य अ
से हब्शी धुनें और नाच लेकर यूरोप ने अपने नाच को ग
की कोशिश की है। इस नाच में भी अफ्रीका की बेचैन गर्म अ
गायब है। ट्वीस्ट में बेचैनी और बेताबी मौजूद है।
अफ्रीकी आत्मा का दर्द गायब है। असल असल है, नकल न
है। मर्जीना नाभि-नृत्य की माहिर मालूम होती है। ऐसा ल
है यह हांगकांग का कोई नाइट क्लब नहीं है। मेज-कुर्सि
दीवारें सब गायब हो चली हैं। चारों ओर रेगिस्तान है। खजूर
एक पेड़ की शाख पर चांद एक जर्द फानूस की तरह अटका है
चारों ओर अमामे और लबादे पहने हुए अरब शेख जमा हैं। अ

ीच के गालीचे पर मर्जीना डांस कर रही है। उसकी बेकरार बहुती ेजिस्तानी आत्मा की पूर्ण वेदना सिमटकर उसकी नाभि में उतर आई ै। हर दर्शक की नज़र उसकी नाभि पर है। जैसे तालाब में कोई ंकरी फेंक दे। उसी तरह पेट में भंवर पड़ते हैं, दायरे बनते हैं और टूट जाते हैं और टूटकर नये रूप धारण करते हैं। भारतीय र्तकी जो बात हाथ, आंख और भवों की मुद्रा से कहती है वह ारी बातें यह अरब लड़की अपने नाभि-नृत्य से कह सकती है। और कह रही है। दर्शक इतने प्रभावित हैं कि सांस तेज़ी से चलने लगी है। चेहरे पर पसीने की बूंदें उभर आई हैं और दो-एक दर्शक घबराकर रूमाल निकालकर अपना चेहरा यों पोंछ रहे हैं जैसे उन्होंने बहुत तेज़ मिर्चों का सालन खा लिया हो। नृत्य का दरियाए-नील बह रहा है। और मर्जीना का पूरा बदन उसकी सतह पर एक बजरे की तरह डोल रहा है। नृत्य की बदलती हुई हर मुद्रा का आरम्भ नाभि से शुरू होता है। हम अपने आरम्भ को पहुंच चुके हैं। जब चारों तरफ़ साया ही साया था। फिर समुन्दर ही समुन्दर था। फिर मछलियां ही मछलियां थीं। फिर दरियाए-नील टूटकर आबशार की तरह गिरने लगता है और मर्जीना एक क्रूर चीख मारकर ग्रीन रूम की तरफ़ भाग जाती है और दर्शक खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से तालियां पीटने लगते हैं। रोशनियां मध्यम होती जाती हैं। थोड़ी देर में चांद, खजूर, रेगिस्तान, गालीचा, सब गायब हैं। उसी नाइट क्लब का घुमा-घुमा यूरोपी वातावरण है। और दर्शक हैरत से यों एक-दूसरे को देखते हैं जैसे अभी-अभी वह किसी दूसरी भूमि से लौटकर आए हों।

मैंने अपना कार्ड एक गुलदस्ते के साथ ग्रीन रूम में भिजवा दिया है। थोड़ी देर के बाद यास्मीन क्लब का मोटे बदन वाला प्रबन्धकर्ता मेरे पास आता है।

"मर्जीना इस वक्त नहीं मिल सकती।" वह मुझसे कहता है।

"कल ?"

"कल भी नहीं।"

"परसों ?"

[illegible] से इन [illegible] आ रही है।"
[illegible] कोई तैनात किया है?"
[illegible]। चीनी [illegible] मुझसे कहता है।
[illegible] मैं चीनी प्रबन्धक से कहता हूं और मैं
[illegible] आ जाता हूं और फिर वापस होटल की ओर।

मगर अभी तो रात जवान है। अभी मैं अपने बिस्तर की जाकर क्या करूंगा। मुझे तो हांगकांग की हर गली एक 'एडवेंचर' लगती है। बहुत दिन हुए जब गोताखोरी का अभ्यास कर र तो मुझे समुन्दर की तह में जाकर अजीब खुशी महसूस होती अपन करने पर ऑक्सीजन का सिलेण्डर लादे पौधों, ह जल झाड़ियों में छिपा हुआ कछुआ और हजार पानों की दुनिया मनोरंजक और रहस्यमयी मालूम होती थी। हांगकांग आकर कुछ ऐसी ही खुशी, आश्चर्य और एक अनजाने-से भय का अ होता है। यह अपरिचित शहर मेरे लिए कितना आकर्षक है। त है, हर मोड़ पर कोई अपरिचित गुंडा चाकू हाथ में लिए मेरी में खड़ा है। सारे बदन में एक अजीब फुरफुरी महसूस होने ल है। एकाएक एक हाथ मेरे सामने आता है। मैं चौंककर खड़ा जाता हूं।

यह एक चीनी का हाथ है। मगर खंजर की जगह उसके ह में एक कार्ड है। और वह पूरी बत्तीसी खोले मुस्करा रहा है। कार्ड को पढ़ता हूं।

"द ग्रो फ्लावर्स क्लब।"

मैं सवालिया नजरों से उस चीनी की तरफ देखता हूं। व फिर मुस्कराता है और बोलता है।

"दी ब्ली फ्लावर्ज क्लब।"

मैं चुप रहता हूं। वह मेरे करीब आकर जरा शरारत-भरे स्व में मुझसे कहता है।

"हांगकांग की सबसे खूबसूरत लड़कियां ...।" बहुधा चीनी र की जगह ल बोलते हैं।

"ओह डियर?"

वह आंख के इशारे से एक बिल्डिंग की ओर इशारा करता है।

ऊंचे रंग के प्रकाशित शब्दों में 'द थी पनावर्स क्लब' का बोर्ड रहा है। बुझ जाता है, चमक जाता है—जैसे कोई आंख र मुझे बुला रहा हो।

पहले बहुत ही कायदे और करीने का एक लॉज जैसे किसी ा होटल का होता है। रिसेप्शन क्लार्क के काउन्टर की जगह कांच वाली एक खिड़की जहां से अन्दर जाने का कार्ड मिलता —पांच डालर का। इससे पहले मैंने किसी नाइट क्लब में यह स्टम नहीं देखा। पांच डालर का टिकट लेकर मैं क्लब के अन्दर ा जाता हूं और समझ जाता हूं कि बहुत मूर्ख बनाया गया हूं। लब में हर नाइट क्लब सेक्स का एक छोटा-सा कारखाना होता । एक चमकीला बूचड़खाना जहां जिन्दा गोश्त बेचा जाता है।

टी (T) की शक्ल का एक बहुत बड़ा हाल है। बहुत उम्दा ानूस, बहुत उम्दा गालीचे, अति सभ्य बैरे। लोग खा रहे हैं, पी हे हैं। जाम से जाम टकरा रहे हैं। निगाहों में एक-सी चमक है। ांखों में एक ही सवाल है।

हॉल के बीच में एक नक्काशीदार लकड़ी के खम्बे के चारों ओर क गोल मेज के गिर्द होस्टेस बैठी हैं। एयर होस्टेस नहीं, नाइट लब की होस्टेस। क्लब में प्रवेश करनेवाले सबसे पहले इसी ज के पास एकत्र होते हैं। देखते हैं, परखते हैं, पसन्द करते हैं। झे याद आते हैं अपने देश में क्लियरेंस सेल की मेजें, जहां एक-ाथ बहुत-से जूते या बहुत-से मोजे या बहुत-सी बनियाइनें या बहुत-ी साड़ियां रखी होती हैं। साड़ी देखो, हाथ लगाओ, पसन्द करो, बेदाम पढ़ो, असली कीमत इतनी, क्लियरेन्स सेल की कीमत इतनी। सुर्ख पैंसिल से क्रास लगा है। जी चाहता है, मेरे हाथ में भी इस वक्त सुर्ख पैंसिल होती। मैं क्रास लगाता जाता। आओ, आओ, देखो। नवीन सभ्यता का कितना बड़ा क्लियरेन्स सेल लगा है। लगता है, आज ही सारी सभ्यता बिक जाएगी।

नक्काशीदार लकड़ी के फ्रेम के नीचे उनके चेहरों की रंग दिखाई देते हैं। गहरे मेक-अप ने दर्द की हर लकीर और उनें रर तहरीर को मिटा डाला है। यह चेहरे कुछ नहीं कहते। साथ मरे हैं, आंखों में कोई आशा नहीं, और सबसे दुख बात यह है कि कोई निराशा भी नहीं। नई सजीली हुई दुल्हें कुछ लोगों के लिए मू-मू करती हैं। मगर उनमें इतनी भी भी शक्ति नहीं। फर्ज कर लो अगर मैं एक मादिन बनकर लड़की के होंठों पर रख दूं। क्या यह लकड़ी की तरह रहेंगे मुझे इसमें भी सन्देह है।

मैं खाली हाथ लटकाकर विनयरोम्स मेन की मेज से दिखी ह की मेज पर बैठ जाता हूं। शराब और खाने का आर्डर देता हूं फिर इधर-उधर देखने लगता हूं। फिर मेरी नजरें दाईं तरफ एक मेज पर रुक जाती हैं।

नवीन फ्रांसीसी फैशन का नीला अतलसी फ्राक पहने हुए र शोख व चंचल हसीना एक पश्चिमी मर्द से बातें करने में व्य है। कांटीनेन्टल ढंग से अंग्रेज़ी बोल रही है, जो मुझे बहुत बन लगती है। लड़की भी लाखों में एक है। सचमुच उस चीनी दल ने मुझे ठीक जगह पर भेज दिया। जब हंसती है तो उसका ह चेहरा ताज़ा शैम्पेन के उज्ज्वल प्रवाह की तरह चमक उठता है उसके बाल कितने सलीके से कटे हुए हैं। चेहरे के आकार कि कोमल हैं। जैसे पूरा चेहरा किसी कोमल शीट को काटकर बन गया हो।

मैं अपने बैरे से धीरे से पूछता हूं, "वह भी कोई होस्टेस है?"

वह उधर देखकर धीरे से मुस्कराकर कहता है, "जी...द मोंद मोंजेल लुइसा है।"

"यह कार्ड उनके पास ले जाओ।"

मैं अपने कार्ड पर फ्रांसीसी में कुछ लिखकर बैरे को दे देता हूं कुछ क्षणों के बाद बैरा उसकी मेज पर है। वह मेरा कार्ड पढ़ रही है। गर्दन की एक हल्की-सी मुद्रा से मेरी ओर देखकर मुस्कराई

अपनी कुर्सी से जरा उठकर भुककर उसे सलाम करता हूं।
ठ जाता हूं। वह बाई अपने पर्स में डालकर मुह फेरकर
श्चिमी मर्द से उसी तरह बातें करने मे व्यस्त हो जाती है ।
मने मुझे भुला दिया हो ।
मैं खाने की ओर ध्यान देता हू ।
कोई पन्द्रह-बीस मिनट के बाद वह पश्चिमी मर्द कनत्र से बिदा
ाता है। अब उसके अतलसी फ्राक की रेशमी सरसराहट मेरी मेज़
रफ बढ़ने लगती है। मेरे दिल की धड़कन तेज़ होने लगती है।
ी तेज़ फ्रांसीसी खुशबू का झोंका मेरे नथुनों मे आता है । वह
सामने आकर मेरी मेज़ पर बैठ जाती है।
"मोद मोज़ेल लुइसा ?" मैं उसकी तरफ देखकर पूछता हू ।
वह सिर की एक हल्की-सी मुद्रा से इकरार में सिर हिलाती

"मैं अप्रैल हू ।"
वह मेरे नाम पर किसी आश्चर्य को प्रकट नहीं करती । एक
ा के लिए उसके लम्बे नाखूनों वाली पोरें मेरे हाथ से मस
ी हैं। जैसे किसीने मेरे हाथ मे गुदगुदी की हो । फिर कुछ
ै।
"क्या पिओगी ?"
"शैम्पेन।"
"कौन-सी शैम्पेन ?"
"शातू गेस्का ८०८।" उसने बैरे को बुलाकर आर्डर दिया ।
"तुम स्पेनी हो कि अनातवी ?" उसने मुझसे कहा।
"हिन्दुस्तानी।" मैंने कहा, "और तुम निस्सन्देह फ्रांसीसी
ो।"
"आधी फ्रांसीसी, आधी चीनी ।" वह हसकर बोली।
"वतन कहां है ?"
"शंघाई।"
बरसों पहले का शंघाई मुझे याद आया। जब सुर्ख फौजों ने

[illegible] अपने पेशे में [illegible] था और [illegible]
[illegible] था। [illegible] में वहाँ के [illegible] में
[illegible] था। [illegible] रखी, सारी [illegible] जिन्दगी,
[illegible] का [illegible]। हालांकि मु
दुकान में कोई [illegible] न था। मगर मुझे मेरे [illegible]
ने बुलवा लिया। बड़ी जल्दी में मुझे [illegible] से आना पड़ा।

"पढ़ाई क्यों छोड़ दिया?" मैंने उस लड़की से पूछा।

"बस छोड़ दिया…" वह बड़ी अदा से बोली।

"अब तुम्हारा कोई यहाँ पर है?"

"हाँ, भाई है, बहन है, मां है।"

"फिर तुमने पढ़ाई क्यों छोड़ दिया?"

"[illegible]!" वह बड़ी [illegible] से [illegible] हुए बोली, "
काम करना पसन्द नहीं।"

इतना कहकर वह जोर से हँसी और [illegible] के कहकहे
बुन्दे उसके होंठों पर फटने लगे और मेरी जिन्दगी के बहुत-से अनु
उसके जवाब के साथ टूट गए। यों भी होता है। और सिर्फ
ही नहीं होता कि कार की पुतलियों के दामन में हमेशा कोई
मां, निर्धन पति या बीमार बच्चा छिपा रहता है। कभी यों
होता है कि बस—मुझे काम करना पसन्द नहीं…।

"और पसन्द क्या है?" मैंने पूछा।

"तेज गाड़ी में घूमना, रोज एक नई ड्रेस खरीदना और
रोज किसी नये दोस्त से मिलना।"

"शौक तो बहुत अच्छे हैं। लेकिन इन सबके लिए अगर
खुद काम न करो तो किसी दूसरे को तुम्हारे लिए काम कर
पड़ेगा।"

"वह मैं नहीं जानती।" उसने फिर बड़ी अदा से इठला
कहा। फिर मेरी तरफ गौर से देखकर बोली, "तुम्हारा नाम
अप्रैल है, लेकिन बातें नवम्बर-दिसम्बर की करते हो।"

"सॉरी।" मैं फौरन सम्भल गया। और उसके जाम के

ास टकराकर पीने लगा। फिर मैंने उसे डांस करने का निमन्त्रण
या। और हम दोनों फ्लोर पर आ गए। डांस करने का उसका
पना ढंग था। जैसे बातें करने का उसका अपना ढंग था। वह कोई
ाम बेदिली से नहीं करती थी। अगर अब से कुछ क्षण पहले
ामरी बातचीत में खुली धूप की सी चमक थी, तो इस वक्त डांस
करते वक्त वह बिलकुल उसके 'रिदम' में डूब गई थी। वह इतनी
कोमल मालूम होती थी कि मांस-हड्डी की जगह किसी उच्च प्रकार
के चीनी जेड की बनी हुई मालूम होती थी। मैंने उससे पूछा :

हांगकांग में तुमसे ज्यादा भी कोई खूबसूरत लड़की है ?" और
फिर उसके जवाब की राह देखे बिना कह दिया, "हैरत है तुमने
आज तक शादी क्यों नहीं की ?"

"वक्त ही नहीं मिला।" वह प्रसन्न भाव में मेरी तरफ ताकते
हुए बोली।

"कल मिलेगा ?" मैंने पूछा

मेरा सवाल सुनकर वह ज़ोर से हंसी। उसने प्रसन्नता से
इनकार में सिर हिला दिया।

"परसों ?"

"परसों भी नहीं..." हंसी उसके होंठों पर चली आ रही
थी।" अगले सत्ताईस दिनों तक बिल्कुल छुट्टी नहीं है। कोई शाम
खाली नहीं है।"

मैंने कहा, "अफसोस, मैं तो छः-सात दिन से ज्यादा इन्तज़ार
नहीं कर सकता। उसके बाद हांगकांग से चला जाऊंगा।"

"इस ज़िन्दगी में मुहब्बत करने के लिए इतनी छुट्टी कहां है ?"
लुइसा मेरी हां में हां मिलाते हुए बोली, "इस समय में तो हर शादी
पुरानी हो जाती है। हर मुहब्बत बेज़ारी में बदल जाती है। मुहब्बत
को तो शैम्पेन की बोतल की तरह एक ही रात में खत्म कर देना
चाहिए वरना बासी हो जाती है। ज़िन्दगी इतनी तेज़ रफ्तार है कि
जितने समय में हम एक-दूसरे से 'हैलो' कहते हैं, एक राकेट ज़मीन
के चारों ओर आधा चक्कर लगा लेता है। मुहब्बत उस युग के लिए

फिर भी वह कवि और उसी [illegible] को देखकर हँसी आई। अरे [illegible]
अब याद तक मुझे हँसी बनकर आती है। [illegible]
से चुका है [illegible] है। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
लगा [illegible] शुरू।

"इसलिए मुहब्बत [illegible] शुरू?" मैंने उससे पूछा।

अब हम दोनों [illegible] से निकल कर बाहर आ [illegible]
आ चुके थे। एकाएक उसे कुछ याद आया उसने अपने पर्स से अपनी डायरी निकाली।

"ठहरो। मैं इसमें तुम्हारी शादी की प्रार्थना नोट कर लूँ।"

"किसने नम्बर पर हूँ?"

"दो हजार इक्कीस के बाद तुम्हारा नम्बर आता है।"

"बहुत लम्बा क्यू है।"

वह सिर हिलाकर बोली, "मैं किसीको क्यू में खड़ा न करती। साफ इनकार करती हूँ। और मेरा इनकार किसी और का इनकार नहीं, एक मर्द का इनकार होता है। मैं तो हर क्षण में डूबकर जिन्दा होती हूँ। और उस एक क्षण में वही पल मेरे लिए सम्पूर्ण होता है। पूरे जीवन की निरर्थकता पर सोच-विचार करने के लिए फुरसत है। यों भी जिन्दगी की अनुरूपता हास्यपूर्ण मालूम होती है। जरा गौर करो। शादी के बाद हर रोज उसी मर्द की सूरत देखूंगी, वही बढ़ी हुई दाढ़ी, वही मसला हुआ मौन, वही खाँसी, थूक…"

मैं हँसने लगा। "मुझे तो तुम कामू की चेली मालूम होती हो।"

उसकी आँखों की चमक बढ़ गई। तुरन्त ने चौंककर मेरी ओर देखा।

फिर धीरे से बोली, "मैं कामू की महबूबा रह चुकी हूँ।"

"तुम पैरिस मे भी रह चुकी हो ?" अकस्मात् मेरे मुह से निकला।

"हर खूबसूरत नाइट क्लब गर्ल अपने जीवन का प्रारम्भ पैरिस से करती है। अगर वह खुशनसीब है तो।"

"और अब ?" मैंने पूछा।

"मिकाऊ मे।" उसने जवाब दिया। फिर स्वयं मुझसे कहने लगी, "मिकाऊ मे बाल्डोर तुमने देखा है ?"

मैंने इकरार मे सिर हिलाया। लेकिन मेरे जवाब का इन्तजार किए बिना उसने अपनी बात जारी रखी। "एक सात मंजिला जुआगृह है। हर मंजिल एक जुआखाना है। पहली मंजिल सबसे घटिया है। यहा जुआ भी सस्ता होता है। और लड़कियां भी सस्ती होती हैं और प्रवेश-फीस भी सबसे कम है। दूसरी मंजिल पहली मंजिल से बेहतर है। तीसरी मंजिल से चौथी मंजिल ' सातवीं मंजिल पर पहुचकर इन्सान जैसे सातवें आसमान पर पहुच जाता है। सातवीं मंजिल पर जिन्दगी का हर ऐश व आराम मौजूद है। अप्सराओं की तरह सुन्दर है। कभी—जब मेरा कोमल जेड का सा बदन कुम्हलाने लगेगा। मैं मिकाऊ चली जाऊंगी। अपनी जिन्दगी सातवीं मंजिल से प्रारम्भ करूंगी। फिर धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों आयु ढलती जाएगी मैं नीचे उतरती जाऊंगी। सातवीं से छठी, छठी से पांचवीं, पांचवीं से चौथी, चौथी से तीसरी, तीसरी से दूसरी, दूसरी से पहली पर। या यों कहो कि पाताल मे उतर जाऊंगी। फिर वहा से एक दिन बाहर गली मे फेंक दी जाऊंगी। बस—खतम।"

वह चुप हो गई। मगर उसके स्वर मे किसी तरह का शोक या दुःख नहीं था।

"जिन्दगी किसी बेहतर तरीके से भी खत्म हो सकती है। मैंने मशविरा दिया।

'नहीं।" वह बड़े निर्णय करने जैसे आवेश मे बोली, यो ही हर जिन्दगी खत्म होती है। सड़कर'''।" उसने सैम्पेन का एक लम्बा घूट लिया। घड़ी की ओर देखा, बोली, "आधा घंटा हो चुका है।"

साठ डालर निकालो।"

"काहे के लिए ?" मैंने पूछा।

"बीस मिनट बात करने के बीस डालर, और दस मिनट म
के चालीस डालर, कुल मिला के साठ डालर होते हैं।"

मैंने उसे साठ डालर देकर कहा, "मुस्कराने के कितने ड
होते हैं, और सास लेने के···।"

"सास लेने के डालर तो म्यूनिसिपल कारपोरेशन वसूल क
है।" वह अपनी कुर्सी से उठते हुए बोली, "और मुस्कराने की कीम
मैं तुमसे फिर किसी दिन वसूल कर लूगी।"

अलविदा लुइसा अब मुझे किसी दूसरी मेज पर जाना है।"

"अलविदा।"

ज़िन्दगी कुत्तो की रेस है। थोड़े-से क्षणो के लिए हमा
से पट्टा उतार लिया जाता है और हमे एक मैदान में भागने के
छोड़ दिया जाता है। एक-दूसरे के आगे-पीछे साथ-साथ भागते
हम सोचते हैं कि हम आजाद हैं। ठीक उसी क्षण हमारे मा
हमपर जुआ खेल रहे होते हैं। या ज़िन्दगी खुशी की रेसगार्ड
जहां हर क्षण की खुशी का टिकट बिकता है। आधे घंटे की मु
के साठ डालर। एक घंटे की मुहब्बत के इतने डालर। एक
के इतने डालर। मगर बिलकुल आखिर में मालूम होता है, ह
कितना बड़ा धोखा किया गया है। जहा से चले थे, वही प
गए···।

अब शैम्पेन मेरे हलक मे मोरी के पानी की तरह बह रही
हालाकि वही शैम्पेन थी। मैंने जल्दी [illegible]
मे उतार ली और कमरे मे बाहर हो लिया।

बाहर वही चीनी खड़ा था। जिसने मुझे कमरे का कार्ड [illegible]
था। वह मुझे देखकर मुस्कराया। मैं नहीं मुस्कराया। वह
करीब आकर रहस्यमय ढग से कहने लगा, "तो अब चलो।"

हां ?" मैंने हैरत से उसकी तरफ देखकर पूछा।
साहब ने कार्ड नहीं पढ़ा है ?" चीनी ने मुझसे कहा।
कार्ड तो पढ़ा था।" मैंने जेब से कार्ड निकालकर उसे दिखाते
हुए.
"ग्री पन्नावर्स क्लब का पता है।"
"कार्ड के दूसरी तरफ देखिए।"
मैंने जल्दी से कार्ड पलटा। दूसरी ओर लिखा था—
"आज रात को किसी वक्त एक बजे से पहले मेरे बोट क्लब में
मिलिए। बहुत जरूरी काम है।"—मीर जानी।
मीर जानी ?—अच्छा वह सिंधी। मुझे एकाएक याद आया।
जल्दी से घड़ी देखी। एक बजने मे पन्द्रह मिनट बाकी थे। मैंने
तेज स्वर मे चीनी से पूछा, "तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?"
"समय काफी था।" चीनी झुककर बोला, "मैंने समझा, साहब
पन्नावर्स क्लब से किसीको साथ लेके चलेंगे।"
"तुम जानते हो बोट क्लब कहां है ?"
"मैं मीर जानी साहब की गाली लाया हूं।"
"गाली ?" मैंने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उसने जल्दी से
एक मरमरी बेंज की ओर संकेत किया।
"ओह—गाड़ी। चलो, मुझे फौरन बोट क्लब ले चलो।"

किनारे से एक मैला सपान बंधा था। मैला, पुराना, बदबूदार।
खतरनाक प्रकार के चीनियों से भरा हुआ, जो सपान मे आनेवाले
हर व्यक्ति को बड़ी शंका की दृष्टि से देखते थे। उन्होंने मुझे भी
उन्हीं निगाहों से घूरा, मगर मेरे साथ आने वाले चीनी को पहचान-
कर रास्ता दे दिया। हम दोनों आगे बढ़े। सपान के बीच में लकड़ी
के एक चौड़े तख्ते पर चलते हुए सपान के दूसरे कोने तक पहुंच
गए। यहां पहले सपान के साथ दूसरा सपान पहले से भी ज्यादा
लम्बा और चौड़ा बंधा था। इस सपान मे बहुत-से मर्द और औरतें

मछली तल रहे थे और खाना पका रहे थे। आग, धुआं, ते और मछली की बास सारे सपान पर छाई हुई थी। किसी हमारी तरफ देखा तक नहीं। संपान के एक तरफ लकड़ी के तख्ते बिछाकर रास्ता छोड़ दिया गया था। उसीपर चलते-चलते हम संपान के दूसरे किनारे पहुंच गए। उसके साथ तीसरा सपान बंधा हुआ था यह संपान पहले दोनों से ज्यादा लम्बा और चौड़ा था और इस सपान के दोनों ओर दायें-बायें दो और छोटे-छोटे संपान बंधे थे।

तीसरे सपान में घुसकर बांसों के एक छोटे-से दरवाजे दाखिल होकर मैंने देखा कि एक तीसरे दरजे के चडूखाने का वातावरण है। गरीब फटे-हाल चीनी हम भारतीयों की तरह संप के फर्श पर दीवारों में टेक लगाए चारों ओर बिखरे पड़े हैं अ चरस-गांजे के दम लगा रहे हैं। कुछ बेसुध पड़े हैं। कुछ बकार र हैं। दम घोटने वाले धुए की कड़वाहट छाई हुई है जो सीधी हल पर असर करती है। मेरा चीनी गाइड मेरे लिए रास्ता बनात उलांघता-फलांगता आगे-आगे चलने लगा, मैं उसके पीछे-पीछे सपान के आखिरी कोने तक पहुंचकर हमने देखा कि हमारा संपा चौथे सपान से बंधा खड़ा है।

अब हम पहले तीनों सपानों पर चलते-चलते समुन्दर के पानी की सतह पर काफी दूर तक आगे आ गए। वाटर-फ्रन्ट का शोर बहुत पीछे रह गया था। और हवा में बदबू भी न थी। कुछ क्षण खड़े रहकर मैंने यहां की सुखदायक हवा में सांस लिया। फिर उचककर चौथे संपान में दाखिल हो गए।

बाहर से यह सपान पहले तीन की तरह मटियाला, मजगजा और पुराना मालूम होता था। मगर अन्दर से बहुत शानदार था। खूब नीचे और गुदगुदे गोके और नीची तिपाइयां और मध्यम-मध्यम रोशनियां, जैसे नीर से बोझिल। बेआवाज चीनी नौकर मादक द्रव्य पेश करते हुए। मालूम होता था कि यह सपान उच्च-कोटि के ग्राहकों के लिए सुरक्षित है। यहां अधिकतर विदेशी ग्राही

मीर चीनी जमा थे। एक चीनी लड़की कांच के मोतियों
फ़ पर्दे के पीछे नाच रही थी और गा रही थी। मगर न
सका नाच देख रहा था न गाना सुन रहा था। उसकी पतली
अपरिचित आवाज़ जैसे वह बाग की दास्तां को मुंह में
गा रही हो। थोड़ी देर के बाद उसका गाना और नाच बन्द
ा। कुछ तालियां बेदिली से गिरीं और महफ़िल पर ख़ा
ई। फिर एक कोने से गिटार की आवाज़ आई और मैंने
खा।
एक कोने में विक्की आना सिंग को लिए बैठा था। दोनों
ा में गिरफ़्तार थे। विक्की बड़ी कठोरता से गिटार के
झोड़ रहा था और भारी नशीली आवाज़ में गा रह
ीनेज का एक गीत···
फिर अप्रैल आया
फिर नया साल आया
तुमने दरवाज़ा बन्द कर दिया और चले गए,
हमें अपनी आवाज़ों में उलझा छोड़कर।
तुम्हारा दिमाग़ तुम्हारी बैंक बुक में ज़िन्दा है।
और तुम्हारी आंखें
फ़र्श के ग़ालीचे से ऊपर देखकर हंसती हैं
और तुम्हारे चांदी के जाम से अब तक
हम शराब पीते हैं।···
विक्की की निगाह मेरे लिए अजनबी थी। वह नशे
लन में संपान से बाहर बहुत दूर समुन्दर के पानियों से भी
ा गया था। आना सिंग की आंखें अधमुंदी थीं और
र उसपर गिरी पड़ती थी और बार-बार विक्की अपने
टहोके से उसे अपने से अलग कर देता था।
इस संपान के आख़िरी सिरे पर जाकर चीनी गाइड
ौर ख़ुद रुककर मेरी तरफ़ झुककर मुझे आगे जाने
रने लगा।

इस घटना के तीन दिन बाद मैं हागकाग एयर-पोर्ट की कैण्टीन में बैठा हुआ खिडकी में बाहर हवाई जहाजो को हवाई अड्डे पर उतरने या उड़ने देख रहा था। यो तो हवाई जहाज का अड्डे पर उतरना या अड्डे से उडान लेना दोनो ही मुश्किल काम समझे जाते हैं और सबसे ज्यादा हवाई दुर्घटनाएं भी इन्हीमे होती हैं। मगर हागकाग का हवाई अड्डा सबसे मुश्किल हवाई अड्डा समझा जाता है। तीन तरफ पहाड़ियो से घिरा हुआ, बहुत ही थोड़ी जमीन में है। चौथी ओर समुन्दर है। याने कही भी रन-वेड को बढ़ाने के लिए जगह नही है। इन्टरनेशनल-पलाइट्स पर काम करनेवालो को अक्सर हागकाग के अड्डे पर विशेष शिक्षा दी जाती है। और जो हागकाग के हवाई अड्डे पर उतरने या यहा से उडान लेने में महारत प्राप्त कर ले उसे श्रेष्ठ हवाबाज समझा जाता है।

मगर मुझे इस समय हवाबाजी के माहिरों में इतनी दिलचस्पी नही थी जितनी दिलचस्पी इस बात में थी कि बिल्कुल समय पर मुझे टोकियो जानेवाले हवाई जहाज से क्यो उतार लिया गया। और इस कैण्टीन में क्यों बिठा दिया गया। कुछ क्षणो तक एयर-पोर्ट पर खासा हगामा रहा। हर व्यक्ति मुझे घूर-घूरकर देख रहा था। हालाकि मैंने किसी प्रकार का हगामा नही किया था मगर जब पुलिस हवाई जहाज के अन्दर से किसी यात्री को उतारकर ले जाए तो थोडा-सा हगामा तो होता ही। मैंने एक सभ्य-सा प्रोटेस्ट तो जरूर किया था मगर उसे भी बेकार समझकर पुलिस के साथ उतरकर कैण्टीन में चला आया था। यहा आधे घण्टे से बेकार बैठा था। टोकियो जानेवाला जहाज मेरी आखो के सामने धातु के पर फैलाए समुन्दर की लहरो के ऊपर उड़कर गया। उसके बाद हिन्दु-

स्तान जानेवाला जहाज भी चला गया । अभी कें० ए
का एक जहाज आकर उतरा ही था कि एक गंजा अंग्रेज
हुआ मेरी मेज पर आया और मुझसे साधारण-सा मेल
मेरे सामने बैठ गया ।

"मिस्टर अप्रैल ?" उसने मुझसे पूछा ।

मैंने इकरार में सिर हिलाया ।

"मैं हर्बर्ट स्टब हूं । हांगकांग की खुफिया पुलिस का
और…"

"मैं जानना चाहता हूं कि मुझे टोकियो जाने से क्यो
दिया गया है । पुलिस को मेरे खिलाफ़ कोई शिकायत है ?"
पूछा ।

"बहुत मामूली शिकायत है ।" हर्बर्ट स्टब ने मुस्कराकर कह

"क्या ?"

"मीर जानी का क़त्ल ।"

"मैंने मीर जानी का क़त्ल नहीं किया ।"

"तो फिर तुम उसके हाउस बोट से भागे क्यों ?"

"इसलिए कि असली मुजरिम मुझे भी क़त्ल करना चाहते थे
वह मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे ।"

"तुम्हारे पीछे-पीछे सिर्फ़ पुलिस आ रही थी । जब इन्स्पेक्टर
डेक पर पहुंचा, तुम छलांग मारकर समुन्दर में गायब हो चुके थे ।
पुलिस पिछले तीन दिनों से तुम्हें तलाश कर रही है । सारा हांग-
कांग छान मारा गया, तुम नहीं मिले । अब गलत नाम से टोकियो
जाते पकड़े गए । अब तुमपर क़त्ल का मुकद्दमा चलेगा । तुम
मानो न मानो केस तुम्हारे खिलाफ़ इतना मज़बूत है कि तुम्हें फांसी
तो होगी ही ।"

"जब मेरे खिलाफ़ केस इतना मज़बूत है तो मुझे आधे घंटे से
इस कैन्टीन में क्यों बिठा रखा है ? हवालात ले चलिए । फांसी
दीजिए, किस्सा ख़त्म ।"

"मरने के लिए इस क़दर बेताब क्यों हैं आप ? अन्त में यह तो

ठीक ही है। मगर मैं इस सिलसिले में आपसे दो-तीन सवाल पूछना चाहता हूं।"

"पूछिए।"

"तीन दिन तक आप रहे कहां? एक अजनबी आदमी के लिए हांगकांग में छिपना बहुत मुश्किल है और जहां तक मेरा ख्याल है, हांगकांग में आप पहली बार आए हैं।"

"निस्सन्देह पहली बार। दूसरी बात यह है कि मैंने छिपने की कोशिश नहीं की और इसी वजह से पुलिस मुझे नहीं ढूंढ सकी। मैं तीन दिन तक गोंगो काई के मल्लाहों की बार में एक बीटी बेरे के मेक-अप में काम करता रहा हूं। मैं चीनी बहुत अच्छी बोल लेता हूं और मेक-अप भी अच्छा करता हूं इसलिए आपकी पुलिस मुझे पहचान नहीं सकी। वे लोग गोंगो काई की बार में कई बार आए थे मगर निराश होकर चले गए।"

"दूसरा सवाल यह है," मिस्टर स्टड अपने सिगार की राख बहुत ही धीरे से झाड़ते हुए बोले, "आप जैसे समझदार और शातिर क़ातिल से ऐसी ग़लती कैसे हो गई कि वह हांगकांग के एयर-पोर्ट पर पकड़ा जाए जबकि उसे मालूम है कि हवाई अड्डे पर खुफ़िया पुलिस की विशेष निगरानी होती है।"

"एक न एक ग़लती तो क़ातिल से हमेशा होती है। वरना पकड़ा कैसे जाए!" मैंने खुफ़िया पुलिस के चीफ़ से कहा, "मगर इस मामले में यह ग़लती नहीं है। जान-बूझकर ऐसा किया गया है। ताकि लोग मुझे पुलिस के हाथों गिरफ़्तार होते देख लें, बस। ख़ास कर वे लोग जो असली क़ातिल हैं और इस वक़्त भी एयर-पोर्ट पर मौजूद हैं।"

"मिस्टर थ्रंपेन!" स्टड गुस्से से बोले, "अब यह गोरखधन्धा आपके किसी काम के नहीं। 'यू आर बुक्ड' (आप फंस गए हैं)।"

"'बट नॉट हैंग्ड ऐज़ यट' (लेकिन अभी मुझे फांसी नहीं लगी है)" मैंने उसे जवाब दिया।

"एक सवाल और, फिर मेरी तहक़ीक़ात ख़त्म है।" मिस्टर

हरबर्ट स्टब वह गुच्छा देखकर चौंक गया। बार-बार सिक्के ो उलट-पलटकर देखता रहा। फिर उसने अपनी जेब में एक किट बुक निकाली और उसमे से कुछ पढ़ा और पढ़कर फिर क्के और गुच्छे को गौर से देखा। सिर हिला के बोला :

"यह तो इन्टर-पोल का स्पेशल मार्क है जो हर हफ्ते बदलता हता है। यह मार्क तो इन्टर-पोल के विशेष एजेन्टों के पास होना ! और दुनिया में चाहे वह कहीं भी हो, हर हफ्ते उनके पास हुच जाता है। मीर जानी के पास यह मार्क कैसे आया ?"

"इसलिए कि मीर जानी कोई औबाश, ऐयाश, बदमाश, गुण्डा ा स्मगलर नहीं था। वह इन्टर-पोल का खास एजेण्ट था और रसों से हागकाग में काम कर रहा था।"

हरबर्ट स्टब के माथे पर विचार की गहरी लकीरें उभर आई। ने बात जारी रखते हुए कहा, "और मेरा नाम भी अप्रैल नहीं है। ई अरविन्द माली हूं, इन्टर-पोल का स्पेशल एजेण्ट।"

इतना कहकर मैंने अपनी जेब से सिक्के वाला एक और गुच्छा नेकाला और उसे भी मिस्टर स्टब के सामने मेज पर फेंक दिया। "गौर से देखो। दोनों मार्क एक ही प्रकार के हैं। दोनों के सूराखों ी सख्या एक है। चाबियों का नम्बर एक है और सिक्के पर लिखा हुआ खुफिया कोड एक है। इन्हें अपनी डायरी से मिला लो और फिर सिक्के पर मेरा असली नाम भी पढ़ लो, अरविन्द माली।"

हरबर्ट स्टब ने जब अच्छी तरह से इत्मीनान कर लिया तो उसके माथे की गहरी लकीरें एकाएक दूर हो गईं। चेहरे का गुबार घट गया। प्रसन्न मुख से उसने मुझसे फिर हाथ मिलाया और बोला, "आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई मिस्टर अरविन्द माली।"

"मुझे अरुण कहो।" मैंने कहा।

"मैं हर्ब हूं।" हर्ब ने और मैंने फिर एक-दूसरे से हाथ मिलाया। वह बोला, "बस एक ही शिकायत है मुझे, इतने बरस से मिस्टर मीर जानी—।"

"मिस्टर मीर जानी नहीं।" मैंने बात काटते हुए कहा, "स्वर्ग

गिरफ्तार करा के सज़ा दिलाने की साज़िश में भी हमारे दुश्मनों ने आपकी पुलिस का उपयोग किया है जान-बूझकर। आपके कुछ आदमी इस षड्यंत्र में शरीक थे।"

"उनके नाम बताओ।"

"मौका आने पर वह भी बता दिए जाएंगे।" मैंने कहा, "इस वक्त तो मैं आपको सिर्फ यह बता रहा हूं कि मेम्पोनी लक्ष्मी सहाय और पाशिया वाले केस से हमें पहली बार यह सुराग मिला कि न्यूयार्क को हेरोन भेजने का सबसे बड़ा केन्द्र हागकांग है। यहां की गैंग को गिरफ्तार करने के लिए दो बार इण्टर-पोल के एजेण्ट भेजे गए। एक को हवाई जहाज में कत्ल कर दिया गया, दूसरे को सोफर्ड होटल में।"

"आल्वानी ड्रेक? अमरीकी करोड़पती के कत्ल की तरफ इशारा कर रहे हो, जिसका आज तक सुराग नहीं मिल सका।"

"आल्वानी ड्रेक अमरीकी करोड़पती नहीं था। वह बेचारा भी इण्टर-पोल का एक सेवक था। न्यूयार्क से उनके आने की खबर पुलिस के सिवा किसीको नहीं थी। इस तरफ भी पुलिस के सिवा किसीको उनके आने की खबर न थी। फिर कैसे वह कत्ल कर दिए गए?…कहिए तो कुछ और उदाहरण दूं?… फेग लैण्ड से—।"

एकाएक मैं कहता-कहता रुक गया, क्योंकि मैंने देखा कि हरबर्ट के चेहरे का रंग उड़ गया है, माथे पर पसीना उभर रहा है और आंखें भयभीत हो रही हैं।

"मैं…अपने बारे में कह सकता हूं…।" हरबर्ट धीरे से बोला। उसकी आवाज़ में लड़खड़ाहट आ चुकी थी। "मैंने आज तक…।"

"मुझे मालूम है।" मैंने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "इण्टर-पोल को तुम्हारी ईमानदारी में कोई शंका नहीं है। इसीलिए मैं तुमसे इतने स्पष्ट रूप में बातें कर रहा हूं। इसीलिए मैंने स्वयं अपना स्वर बदलकर फोन पर तुम्हें सूचित किया कि मीर जानी का कातिल एयर-पोर्ट से भाग रहा है, ताकि तुम मुझे फौरन आकर गिरफ्तार कर सको। तुम्हें सूचित करनेवाला तुम्हारी पुलिस का आदमी

मने के अलावा...।"

"वह तो एक रहस्य है। और मैं चाहता हूं कि मेरी यही दोहरत ती रहे—तुम्हारी पुलिस में और हांगकांग के क्लबों में।"

"मगर असल बात क्या है? मेरा मतलब है, अगर तुम सचमुच री मदद चाहते हो तो मुझे किसी हद तक तो सूचित किया जाना चाहिए। अगर इण्टर-पोल के आला अफसरों की पालिसी इसके खिलाफ न हो।"

"नहीं, हरबर्ट! तुम्हारे मामले में मुझे छूट दे दी गई है। मामला यह है कि पिछले दस सालों से हांगकांग मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार का केन्द्र बनता जा रहा है। उधर अफीम और उससे बनी हुई दूसरी चीजों की गैर-कानूनी खपत अमरीका में बढ़ती जा रही है। क्राइम सिण्डीकेट की मदद से, नौजवान अमरीकियों और स्कूल के बच्चों तक को इन मादक द्रव्यों का आदी बनाया जा रहा है। अंकशास्त्री बताते हैं कि स्कूल के बच्चों में यह बला आज से दस साल पहले अगर सिर्फ तीन प्रतिशत थी, तो अब सत्ताईस प्रतिशत हो चुकी है। और नौजवानों में यह आदत चालीस प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। इससे राष्ट्र के आचार पर कितना बड़ा असर पड़ता है, इसका तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो। हौले-हौले अमरीका से यह बला कनाडा भी पहुंच गई है। मैं तुम्हें ज्यादा विवरणों से परेशान नहीं करूंगा लेकिन यूरोप में भी इसके अड्डे फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी और दूसरे देशों में कायम हो चुके हैं, और इनकी रोकथाम बेहद मुश्किल है और उस वक्त तक लगभग नामुमकिन है, जब तक दुनिया-भर में मादक द्रव्यों को बांटने वाले अड्डे खत्म न कर दिए जाएं। इसीलिए पिछले कई बरस से यह काम इण्टर-पोल जैसी अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सी के सुपुर्द किया गया है। इसीलिए हम हांगकांग आए हैं, ताकि असल उद्गम का मुंह बन्द कर सकें।"

"वह कौन है?" हरबर्ट की आंखों में एक अद्भुत चमक पैदा हो गई थी, वह मेज पर कोहनियां रखे आगे खिसक आया था।

इससे पहले कि मैं कुछ कहता। दरवाज़ा खुला और एक

औरत जिसने पुलिस की वर्दी पहन रखी थी, कमरे में चाय की
ट्रे लेकर दाखिल हुई।

हरबर्ट ने डपटकर उससे कहा,
"तुमसे इस कमरे में चाय लाने के लिए किसने कहा?"
वह औरत बोली, शावलाल साहब ने।"
हरबर्ट मुस्कराया, "शावलाल मेरा डिप्टी है।" फिर उसने चीनी औरत से कमरे के दूसरे कोने में पड़ी हुई मेज की त इशारा करके कहा, "वहां चाय की ट्रे रख दो और हम दोनों के चाय बनाकर लाओ। तुम कैसी चाय पीते हो अरुण?"
"मैं तो चाय में लीबू डाल के पीता हूं।" मैंने जवाब दिया।
"लीबू तो मैं नहीं लाई।" वह चीनी औरत कुछ घबरा बोली।

कोई बात नहीं, लीबू लेकर आओ। और चाय का नया पॉ भी। क्योंकि जब तक तुम लीबू लेकर आओगी, यह केतली ठं हो जाएगी, मिस टिंग!"
मिस टिंग हम दोनों की तरफ सम्माननीय भाव में झुकी, फि बाहर चली गई। ऐसा लगता था जैसे मैंने उसे कहीं देखा है। म मस्तिष्क पर जोर डालने पर भी मालूम न हो सका कि कहां दे है। कोई चालीस बरस की होगी। बदसूरत और कुछ कुबड़ी व दायें पांव से लंग भी था।
"हर जगह की पुलिस-फोर्स कुरूप औरतों को भरती करने क आदी मालूम होती है।"
"हमें कोई नाइट क्लब तो खोलना नहीं है।" हरबर्ट मुस्करा कर बोले, "फिर आजकल के मुजरिम अधिकतर नौजवान और खूब सूरत और पढ़े-लिखे भी होते हैं। वह बहुत जल्द हमारी सुन्दर

कियों को भरमा लेते। नम्बर दो पर यह गौर भी करो कि
दूरत लड़कियों को नौकरी देने से खुद पुलिस के दफ्तर कितने
जाएंगे ? इसीलिए मिस टिंग बेहतर है। कुरूप और कुबड़ी, और
की मारी हुई। मगर बहुत अच्छी स्टैनो है। पिछले दस साल से
से यहां का काम करती है। इसको मर्दों से नफरत है और मर्द
इससे। इसकी पूरी हिस्ट्री से हम सूचित हैं। मैं तो जहां तक हो
किसी खूबसूरत लड़की को पुलिस फोर्स में घुसने नहीं देता।"

"बहुत अच्छा करते हो।" मैंने उससे सहमत होते हुए कहा।
इतने में दरवाजा फिर खुला और मिस टिंग नया ट्रे और नया
ान लेकर दाखिल हुई और हमें सम्बोधित किए बिना हमारी
क अपनी कुबड़ी पीठ करके हमसे दूर के कमरे के दूसरे कोने में
ए बनाने लगी।

"बात बीच ही में रह गई," हरबर्ट बोला, "और इससे मुझे
और बात याद आ गई। तुम तो इण्टर-पोल के हिन्दुस्तानी
शन के मेम्बर होगे ?"

"स्पष्ट है।"

"तो तुम्हारे देश को मादक द्रव्यों की आयात निर्यात से क्या
लचस्पी हो सकती है। क्या हांगकांग से वहां भी मादक द्रव्य
ते हैं ?"

"नहीं।" मैंने सिर हिलाकर कहा, "मगर सोना जाता है।
ने का ऐसा बुरा नशा सवार है हमारी जनता के मस्तिष्क पर कि
सी तरह नहीं उतरता। हमने पिछले आठ बरस से पूरा जोर लगा के
ध्य पूर्व से सोने की आयात को किसी न किसी तरह से रोक दिया है।
ह काम भी इण्टर-पोल के जिम्मे है। इण्टर-पोल की मदद से कबरस,
गल्टा, बैरुत, तेहरान, कराची, और जोधपुर के अड्डे तोड़ देने में
म कामयाब हो चुके हैं। अब इधर से केवल आठ-दस करोड़
का सोना स्मगल होता है। मगर अब इधर का रास्ता बन्द किया
है तो सोना हांगकांग से आने लगा है। सोना और जवाहरात, सेरों
और ढेरों नाजायज तरीके से हिन्दुस्तान में आयात किया जा रहा

है। और इससे हमारी अर्थ-व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ र
और हम इसे खत्म कर देना चाहते हैं। दुर्भाग्य से
व्यापार का केन्द्र भी हागकांग है। छोटे-छोटे स्मगलरों,
पजिये ब्लैक-मार्केटियों को तो हम रोकथाम कर सकते हैं
उनके नाम और पते हिन्दुस्तान और हागकांग दोनों जगह जान
मगर उनको पकड़ने से क्या होगा ? असल मकसद तो उद्ग
बन्द करने का है और बड़े अपराधियों को पकड़ने का है। त्रि
केन्द्र स्थान हागकाग है, और जो हागकाग ही में रहते हैं।

"और जिनके नाम तुम जानते हो !" हरबर्ट के कांपते स्व
उसके दिल की धड़कन भी शामिल थी। मुझे और उसे दोनों
मालूम था कि बातचीत अब इधर-उधर से डोलती हुई ठीक स
पर आ पहुची है।

"दो आदमी हैं।" मैंने उससे कहा और चुप हो गया। क्यों
मिस टिंग हमारी ओर चाय लेकर बढ़ रही थी।

हरबर्ट के माथे पर बल पड गए। उसने ज़रा कड़क स्वर
मिस टिंग को सम्बोधित किया, "अब चाय जल्दी से रखकर यहाँ
चली जाओ !"

मिस टिंग ने चाय की एक प्याली मेरे सामने रखी। उसमें नींबू
दो फाकें पड़ी हुई थी। एक चाय अपने बॉस के सामने।—सम्मान
के भाव में वह हम दोनो के सामने झुकी। फिर मुड़कर दूसरे
की तरफ चली गई और चाय का सामान एकत्र करने लगी।

"वे दो आदमी कौन हैं ?" हरबर्ट ने संकेत में मुझसे पूछा।

"एक का नाम तो मैं जानता हू," मैंने भी धीरे से कहा, "दूस
का नाम मैं नहीं जानता।"

"जिसका नाम जानते हो वह कौन है ?"

मैंने जेब से एक छोटी-सी शीशी निकाली और क्षमा
से कहा, "माफ कीजिएगा, मुझे 'वायबिटीज़' का रोग
के साथ मैं यह गोली जरूर लेता हू।"

मैंने शीशी से सफेद रंग की एक छोटी-सी गोली निकाली

उसे चाय के प्याले में गिरा दिया।

"हां, तो उस आदमी का नाम?" हरबर्ट ने बड़ी बेचैनी से पूछा।

"बताता हूं, जरा एक सिगरेट तो सुलगा लूं।" मैंने जेब से सिगरेट-केस निकाला। उसे हाथ में लेकर सिगरेट निकालने ही वाला था कि मेरी दृष्टि मिस टिंग पर पड़ी जो चाय के बरतन ट्रे में डालकर हमारी ओर घूम रही थी। उसके एक हाथ में ट्रे थी दूसरे हाथ में जो था उसे देखकर मैं चौंक गया। जल्दी से मैंने सिगरेट-केस का बटन दबाया।

कमरे के दूसरे कोने से एक ज़ोर की चीख सुनाई दी। मिस टिंग की ट्रे फर्श पर गिर चुकी थी और चाय के सारे बर्तन फर्श पर गिरकर टूट रहे थे।

हम दोनों घबराकर अपनी कुर्सियों से उठ रहे थे कि मिस टिंग बड़ी फुर्ती से अपना सारा कुबड़ापन और लंग भूलकर दरवाज़ा खोलकर हमारे कमरे से बाहर निकल गई। यह सारी घटना थोड़े-से क्षणों में समाप्त हो गई। हरबर्ट की बुरी हालत थी। वह कुछ इतने आश्चर्य से और खुले मुंह से उधर देख रहा था *जिधर से मिस टिंग दरवाज़ा खोलकर भागी थी कि उसे यों* देखकर एकबारगी मुझे हंसी आ गई। कुछ क्षणों के बाद हरबर्ट भी बाहर भागा। मैं भी—मगर मिस टिंग लोप हो चुकी थी।

हरबर्ट अपने डिप्टी दारोगा के पास जाने वाला था कि मैंने उसकी बांह पकड़कर उसे रोक लिया।

"अब कुछ हासिल न होगा, उसे जाने दो।"

"मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो, मुझे मालूम करने दो।" हरबर्ट क्रोध से अपना दामन छुड़ाते हुए बोला।

मैंने उससे कहा, "इस खिड़की में आ जाओ तो तुम्हें सब मालूम हो जाएगा।"

हम दोनों खिड़की में खड़े हो गए।

यहां से पुलिस चीफ की कार साफ नजर आ रही थी। उसमें बैठा हुआ उसका डिप्टी शाकास।

फिर हमने मिस टिंग को एक कोने में अपना कुबड़ापन अपना लंग धारण करते हुए देखा। और वह कुबड़ापन धारण से पहले उसकी जो चाल थी वह भी मैंने देखी। और फिर चाल-ढाल मुझे कुछ जानी-पहचानी-सी मालूम हुई। मगर इस बहन फिर आगे न जा सका।

मिस टिंग ने हौले से शाकास से कुछ कहा और फिर हम कमरे की खिड़कियों की ओर इशारा किया।

"मैं इसे यहां से एक कुतिया की तरह मार सकता हूं।" हरब अपना पिस्तौल निकालने लगा। मैंने उसका हाथ रोक दिया।

"रहने दो, और तमाशा देखो। इस कुबड़ी औरत को जिन्दा गिरफ्तार करना ही बेहतर है।"

शाकास ने मुस्कराकर हमारे कमरे की तरफ देखा। हम उ बहुत दूर थे। वह हमारे कमरे की तरफ जल्दी-जल्दी आ रहा थ फिर भी यहां तक पहुंचने में उसे दस-पन्द्रह मिनट तो जरूर लगे वह हमारी तरफ आ रहा था और बूढ़ी मिस टिंग पुलिस चीफ क कार में उसकी सीट बैठ पर चुकी थी। और अब वह बड़ी सावधा थे मगर बड़ी होशियारी से पुलिस चीफ की कार को हवाई अड्डे के बाहर ले जा रही थी। एक कान्स्टेबल उसे सैल्यूट कर रहा था।

"ब्लाडी विच।" हरबर्ट गुस्से से गुर्राया।

फिर एकदम ठंडा होकर कुर्सी पर बैठ गया और मुझसे पूछने लगा.

"मगर हुआ क्या? वह भागी क्यों?"

मैंने जेब से अपना सिगरेट-केस निकाला और उससे कहा, "अपने हाथ की हथेली मेरे सामने फैलाकर रखो।"

... ने हाथ की हथेली मेरे सामने थोड़ी दूरी पर फैलाकर ... निकालने के लिए बटन दबाया। ... हरबर्ट दर्द से बिलबिलाने लगा। उसकी हथेली में

ो इंच लम्बा एक बारीक और तेज फौलादी कांटा चुभ गया था।
ौर वह दर्द से बिलबिला रहा था।
मैंने उसकी हथेली से फौलादी कांटा निकाल दिया। थोड़ा-सा
ून बहकर बन्द हो गया।
"थोड़ी देर में दर्द भी चला जाएगा।" मैंने उसे इत्मीनान
दिलाया।
"यह क्या बेहूदगी है।" वह गुस्से से बोला।
"वास्तव में यह तो सिगरेटकेस है।" मैंने बटन दबाकर सिगरेटकेस
खोलकर उसे दिखाया। केस में सिगरेट भरे हुए थे। मैंने एक सिगरेट
खुद लिया दूसरा उसे दिया। फिर सिगरेटकेस बन्द करते हुए कहा,
"मगर इसके अन्दर एक और कमानी भी है। खतरा महसूस करते
ही आप इस कमानी को दबा दीजिए। इसमें से एक फौलादी कांटा
निकलेगा और आपके दुश्मन की आंख में घुस जाएगा। मैंने निशाना
तो उस बुड्ढी की आंख का बाधा था मगर जल्दी में निशाना चूक
गया। यह कांटा उसके कान की लौ में जा घुसा। फिर भी अपनी
जान तो बच गई।"
"वह क्या कर रही थी ?"
"जब मैंने देखा उसके एक हाथ मे ट्रे थी—चाय की ट्रे और
दूसरे हाथ में यह था।"
मैंने कमरे के दूसरे कोने मे जाकर चाय के टूटे हुए सामान
से एक जेबी पिस्तौल उठाकर हरबर्ट को दिखाया।
"तुम्हें शुबाह किस वक्त हुआ ?"
मैंने अपनी चाय की प्याली दिखाई। चाय के पानी का रंग
गहरा हरा हो चुका था—हरा और काला, और उसमें से अब तक
बुलबुले उठ रहे थे।
"वह जो बहुमूत्र की गोली मैंने चाय में डाली वह वास्तव
मे बहुमूत्र की गोली नहीं थी। जहर मालूम करने की गोली थी।"
मैंने हरबर्ट को बताया, "मैं हमेशा सावधानी के [illegible]
पहले यह गोली अपनी प्याली मे डाल लेता हूं। अगर [illegible]

...र जानी का कातिल है। मेरी इजाजत के बगैर पुलिस का भी
ई आदमी इससे न मिल पाए।"

सक्सेना ने अपने चीफ को फिर सैल्यूट किया और मुझे मेरे
से से ज़ोर से पकड़कर आगे को धक्का दिया। और पिस्तौल
निकालकर बोला, "नो नानसेन्स ! वरना यह पिस्तौल देखते
हो ?"

एक तरफ खाकाल, दूसरी तरफ हरवर्ट—मुझे हंसी आ रही
थी। मगर साथ में दर्द भी महसूस कर रहा था। वास्तव में
पाला बड़ी ज़ोर का पड़ा था। और बिलकुल आशा के विरुद्ध।

मिस्टर खाकाल और स्टव दोनों अरुण को सेण्ट्रल लॉक-अ
में लेकर आए जो अमरीकन क्लब और फ्रीमेसन लाज के पिछवा
बना है। यहां पर उसे बन्द कर दिया गया। दूसरे दिन अखबार
में मीर जानी के कातिल की तस्वीर भी छप गई।

तीन दिन तक अरुण माली हवालात में बड़े मज़े से रहा। ...
दिन तक हरवर्ट और माली की बात विवरणपूर्वक होती रह
और हरवर्ट जिस हद तक मालूमात भेज सकता था उसने माली ...
भेज दीं।

कायदा यह था कि हर रोज़ जांच-पड़ताल के बहाने हर...
माली को अपने कमरे में बुला लेता था और दरवाज़ा बन्द क...
दोनों आफिस से मिले हुए हरवर्ट के प्राइवेट रूम में चले जा...
यहां माली घंटों हांगकांग पुलिस की फाइलों को पढ़ता रहता...
ज़रूरी कागज़ात के नोट्स लेता। फिर उसे वापस हवाला...
लाकर बन्द कर दिया जाता। दोपहर का खाना वह ...

...र पर खड़ा था। उसके साथ दो चीनी कांस्टेबल थे। और वह मेरी ...त देखकर अजीब तरह से मुस्करा रहे थे।

मैंने अपनी कमर को सहलाते हुए शाकास की तरफ देखकर ...हा, 'मिस्टर स्टब की छानबीन का तरीका दूसरा था।'

"मिस्टर स्टब की शक्ल अब तुम कभी नहीं देखोगे।" शाकास ...के स्वर में घमंड और विजयी होने का भाव था, "उसे वापस ...गेंड बुला लिया गया है।"

"ओह...!" बात मेरी समझ में आने लगी।

"इसके कपड़ों की तलाशी लो।"

मैंने शाकास से कहा, "तुम बड़े मूर्ख हो। इतनी देर कर दी ...तुमने। मैंने सब जरूरी कागज जला दिए हैं।"

शाकास ने क्रोध में आकर मुझे जोर की एक ठोकर मारी।

"इसे नंगा कर दो, बिल्कुल नंगा।" उसने आदेश दिया।

कपड़े उतारकर मेरे सब कपड़ों और मेरे नंगे बदन की तलाशी ली गई। कुछ हाथ न आया।

"तुम कौन हो?" शाकास ने सवाल किया।

"अप्रैल।"

"झूठ! अप्रैल तुम्हारा नाम नहीं है।"

"तो क्या है?"

"मैं सवाल करता हूं, जवाब तुम दो।" शाकास चिल्लाया।

"तुम कोई नाम बताओ, मैं वही नाम रख लूंगा। मिसाल के तौर पर डबल क्रास। डबल क्रास कैसा नाम रहेगा।" मैंने शाकास से कहा।

तीर निशाने पर लगा। शाकास ने मुझे घूसा मारना चाहा, मैंने बदन चुरा लिया वरना शायद जबड़ा टूट जाता।

"तुम हांगकांग क्यों आए हो?"

"मीर जानी का कत्ल करने।"

"तुम स्वीकार करते हो कि तुमने मीर जानी का कत्ल किया?" शाकास हैरत से बोला।

"मैं आज से तीन दिन पहले स्टब साहब के...

चुका हूँ। कायदे से तो अब पुलिस को मुफ्कार मुकद्दमा च
चाहिए।"

"तुम झूठ बोलते हो, तुमने मीर जानी का कत्ल नहीं कि

"याने आप मुझसे स्वीकार करवाना चाहते हैं कि मैं नि
हूँ। चलिए यों ही सही। मैं निर्दोष हूँ। अपनी हवालात से आ
कीजिए। या मुफ्कार इस दोष के अनुसार मुकद्दमा चलाइए कि
निर्दोष हूँ।"

"वो माइक्रो फिल्में कहा हैं?" शाकास ने सीधा-सादा सवा
किया।

"मुझे बहुत भूख लग रही थी, खा गया।" मैंने जवाब दिया।

उन लोगों ने फिर बड़ी सावधानी से मेरे कपड़ों और मेरे बद
की तलाशी ली। सिगरेटकेस को बार-बार खोलकर एक-एक
सिगरेट अलग करके देखा। हर सिगरेट का चूरा-चूरा कर दिया।
मगर उन्हें वह माइक्रो फिल्में नहीं मिली। मेरी ऐनक का फ्रेम तोड़
दिया मगर वह माइक्रो फिल्में सामने न आईं—हवालात के एक
एक कोने की तलाशी ली गई। आखिर दांत पीसते वे लोग चले
गए।

कोई एक बजे के करीब हवालात का दरवाजा फिर खुला।
अब जीती-जागती, मुस्कराती, कसरती बदन वाली आना सिर भरने
कटे हुए बाल झनाती दाखिल हुई। कुछ देर खड़ी मेरी तरफ गौर से
देखती रही। फिर मेरे बिस्तर पर बैठ गई।

"हाल कैसा है?"

जोड़-जोड़ दुखता है, आना! इस हवालात से निकालने का
कोई प्रबन्ध करो। मैं समझता था, मेरी गिरफ्तारी की खबर पाकर
तुम या मैं मुझसे मिलने के लिए आओगी। मे नहीं आई?"

"मे हांगकांग में नहीं है।"

"अच्छा!"

"हां। और तुम हवालात में हो।...तुम्हें निकालने की कोई
चाहिए। मगर तुम भी तो इतनी हठ किए बैठे हो।

तो ही नहीं हो वह माइक्रो फिल्में कहां रखी है ?"

मैं बराबर उनके दायें कान की तरफ देख रहा था, जहां पर क हल्के जख्म का निशान बाकी रह गया था।

"अरे यह तुम थीं।" मैं जोर से चीखा, "कुबड़ी हसीनो।"

मिस आना सिन हंसने लगी।

"तुमने ठीक समय पर अपने-आपको बचा लिया। वरना अब क मर चुके होते।"

"और तुमने भी अपनी आंख को बचा लिया, वरना यह कांटा तुम्हारी आंख के अन्दर घुस गया होता। ऐसी खूबसूरत आंख अंधी हो जाती···हाय···हाय—मुझे उस वक्त सन्देह तो हुआ मगर तुम्हारा ख्याल नहीं आया।"

मिस आना सिन के बाजुओं की मछलियां तड़पने लगीं। "मैं तुम्हारे बदन की एक-एक हड्डी तोड़ सकती हूं।" वह दांत पीसकर बोली, "मैं पांच मिनट में तुम्हें खत्म कर सकती हूं।"

"तो शुरू करो।"

"पहले वह माइक्रो फिल्में मेरे हवाले कर दो।"

"वह तो मेरी जिन्दगी है। उन्हें तुम्हारे हवाले कैसे कर सकता हूं।"

"मैं तुमसे उगलवा लूंगी। तुम खुद ही मुझे बता दोगे कि व फिल्में कहां छिपाकर रखी हैं तुमने···दर्द की एक सीमा होती है उसके आगे कोई इन्सान नहीं जा सकता। सहन की एक सीमा हो है। मैं तुम्हें उन सीमाओं से आगे ले जाऊंगी। तुम जिन्दा रहो तुम महसूस भी करोगे। पीड़ा की तीव्रता से बिलबिलाते-बिलबिल तुम उस स्थान पर पहुंच जाओगे जहां कोई इन्सान सहन नहीं सकता—वहां पहुंचकर उसे बताना ही पड़ता है। और इस अ में तुम्हारे बदन की एक हड्डी भी नहीं टूटेगी। मैं पुलिस के अ सन्तरियों की तरह तुम्हें नहीं पीटूंगी। मेरा तरीका दूसरा है, विशेषकर चीनी है। राज उगलवाने का पुराना चीनी तरीका

"पुराने तरीके बेहतरीन होते हैं। और जितने नये

ये पुराने तरीकों के नये रूप हैं एक तरह से—मिसाल के तौ
यह फौलादी काँटा जिसकी वजह से तुम्हारा निशाना चूक ग
जंगल में रहनेवाले भीलों का आविष्कार। दक्षिणी अमरीक
जंगली कबीलों में भी ब्लो-पाइप का हथियार प्रचलित है। वि
द्वारा जहरीले काँटे से दुश्मन को मार दिया जाता है। मैं अ
अपने फौलादी काँटे की धार में जहर मिला देता तो आज तुम
परेशान करने के लिए जिन्दा न होतीं।"

"ज्यादा बातें न करो। बताओ—माइक्रो फिल्में कहाँ हैं?"
आना सिंग ने मेरे टखने मजबूती से पकड़ लिए। कैसी फौलादी पक
थी उसकी। कहने लगी, "धीरे-धीरे मैं टखनों से ऊपर चढ़ूँगी।
मेरे हाथ की हल्की से हल्की जुम्बिश से तुम्हारे बदन में दर्द ब
जाएगा। यहाँ तक कि एक स्थान पर पहुँचकर तुम सब उ
दोगे। आज तक आना अपने काम में असफल नहीं हुई है।"

उसने मेरे बदन के कपड़े उतार दिए। प्रयत्न बेकार था। मैं द
सहने के लिए तैयार हो गया। आज मुकाबला था। दर्द देने का
दर्द सहने का—हिन्दुस्तानियों ने बहुत दर्द सहा है। सहन-शक्ति
उनमें बहुत है। आज उस शक्ति की परीक्षा होगी।

धीरे-धीरे वह मेरे टखनों से शुरू हुई। दर्द पैदा करने में
उसकी उंगलियाँ माहिर थीं। कहाँ मास को पकड़ना है कहाँ छोड़
देना है। दर्द पैदा करने के लिए यह कोई कच्ची कोशिश नहीं थी।
वह उंगलियाँ एक-एक रग और एक-एक नस का ठिकाना जानती
थीं। आना सिंग ने दर्द को संगीत की तरह मेरे बदन में जगाया
था। और हौले-हौले दर्द मेरे बदन में एक सिम्फनी की तरह बढ़ रहा
था। पिंडलियों से वह मेरी रान तक आ गई। रान से कमर, और
कमर से पसली, और पसलियों से वह जब मेरे कंधों तक पहुँचने
लगी तो दर्द के तूफान में मेरा बदन झूल रहा था और दर्द के उस
झूले और पेंग के अन्दर जैसे आना के वह मध्यम आवाज के इशारे
एक लय की तरह काम करते हुए बार-बार एक ही केन्द्र पर लट-
कते हुए। माइक्रो फिल्म कहाँ है? जैसे हर क्षण मुझे याद

ते हुए कि इस हाल पर सम देने से बदन का दर्द दूर हो सकता
-जब मेरे छातों के नीचे मेरी बगलों में उसने हाथ रखे तो एका-
मुझे महसूस हो गया कि दर्द के सहन करने की सीमा अब
ल चुकी है। अब दर्द मेरी सहन-शक्ति से बाहर है। अब मैं
न दूंगा। ठीक उन्हीं क्षणों में मैंने अपने हलक के अन्दर रखी
सुफिया गोली को हलक के नीचे से निकालकर दांतों में रखा।
र फिर दांत जोर से पीस लिए।

मुमकिन है जबान भी कट गई हो। मुझे कुछ याद नहीं क्योंकि
ह गोली ऐसे ही मौकों के लिए इस्तेमाल की जाती है। जब पीड़ा
हन की सीमा उलांघ जाए। और इण्टर-पोल के हर एजेण्ट को
स गोली को हलक में रखने की शिक्षा दी जाती है। गोली दांतों
ते टूट गई। मैंने मुह खोल दिया। मेरे मुह से सफेद-सा धुआं
निकलने लगा। फिर मुझे नहीं मालूम क्या हुआ। मेरी आंखें अपने-
आप बन्द होने लगीं। होश-हवास जवाब देने लगे। धुए के गहरे
गुबार में मैंने एक पल के लिए आना सिंग का भयभीत और आश्चर्य-
जनक चेहरा धुन्ध में डोलते हुए देखा। फिर मैं बेहोश हो गया।

जब मैं होश मे आया तो मेरे चारो ओर अंधियारा था। और
एक गहरी मोटी ऊनी धुन्ध मेरे चारो ओर छाई हुई थी। हौले-हौले
जब आखें उस गहरी धुन्ध से परिचित होने लगी तो बदन की
दूसरी इंद्रियां जागने लगी। गहरे-गहरे सांस लेकर मैंने मालूम किया
कि इस कमरे की हवा मे वह बास है जो मशीन से साफ की गई
हवा मे होती है। इससे मैंने अनुमान लगाया कि यह कमरा किसी
जमीन के निचले भाग में है। सेन्ट्रल लॉक-अप नहीं है। फि
शायद बेहद गैर-महसूस तरीके पर मेरी छठी इन्द्री ने मुझे सूचि
किया कि कोई इस कमरे में दाखिल हुआ है। मैंने शीघ्र ही
आंखें बन्द कर ली और सोता बन गया।

कमरे में धीरे से कहीं पर बटन दबाने की हल्की-सी

आई। और फिर और अधियारा कमरा थोड़ा-सा अंधियारा गया। फिर एक और बटन दबाया गया और अब कमरे में रोशनी फैल गई जैसे भोर के उजियारे में होती है—बहुत ही सुखदायक और इन्द्रियों को शांत करनेवाली। फिर मुझे बिस्तर के पास रेशमी कपड़ों की सरसराहट-सी सुनाई दी। धीरे से आगे मोमी।

मैं हल्के नाक और हल्के सफेद रात के कपड़ों में मुस्कराती पास खड़ी थी—भोर के धुधलकों में कांपती हुई गुलाब की पत्ती की तरह। उसे अपने पास देखकर अरुण माली के कमजोर बदन की इन्द्रियां और भी कमजोर और संवेदनशील होने लगीं। उसने अपने दोनों हाथ बड़ी मुश्किल से फैलाए और कमजोर आवाज में बोला :

"मैं—!"

मैं उससे लिपट गई। उसने माली के कमजोर बदन को बाहों दोनों बाहों में ले लिया। "अब सो जाओ, मेरे अप्रैल—बहार के पहले शगूफे—मेरी बांहों में सो जाओ। यहां तुम्हें कोई खतरा नहीं है।"

वह सो गया। और फिर जगा भी, और फिर सो गया। और इस सोने और जागने के बीच में उसे मैं का खूबसूरत चेहरा उस पर झुका हुआ दिखाई देता था—उसके होंठों को चूमता हुआ। अपने आंसुओं से उसके गालों को भिगोता हुआ, अपनी उंगलियों से उसके बालों से खेलता हुआ, थपक-थपककर मुहब्बत करनेवाली मेहरबान औरत की तरह सुलाता हुआ। और फिर इस सोने-जागने और प्यार करनेवाले चेहरे के बीच में उसे ऐसा लगता जैसे बेहोशी की अवस्था में उसे और कई चेहरे देखने को मिलते हैं। एक बूढ़ा चेहरा था जैसे उसकी मां का हो, यानी उसकी मां अगर जीती होती। सफेद बाल। चेहरा दर्द, करुणा और क्षमा से भरपूर। उन गिलाफी आंखों के किनारों से कभी-कभी एक-आध आंसू बहता। वह सफेद झुर्रियों भरे हाथ जो उसे 'सूप' पिलाते थे, उसके

ए सारा ऐतबार करने लगते हैं। उनके हाँफते हुए होंठों में ज़िन्दगी
नर्म-नर्म निवाले डालते थे। जैसे ज़िन्दगी फिर से उनके बदन
पर रही हो। बीच-बीच में बेहोशी के लम्बे दौरे आते थे जब
मुझे कुछ याद नहीं रहता था। वह कहाँ पर है?

कभी-कभी उस मुर्दा की अवस्था में एक चेहरा उभरता था। एक चौड़ा सूखा हुआ माथा, बाल पीछे को घूमे हुए, लाल काले, ... सफ़ेद। असाधारण तौर पर ज़हीन आँखें और मज़बूत ठोड़ी ऊपर भुके हुए होंठों की पतली-सी लकीर किसी मोड़ की तरह घूमती और बन्द होती थी। फिर वह चेहरा भी अंधेरे में गायब हो जाता। और उसके बदन में सिर्फ़ दर्द की मुहब्बत-भरी राहों का भीतर स्पर्श बाकी रह जाता। या उसकी दिलदार बातों का संकेत। वह संकेत को उसे थपक-थपककर एक बच्चे की तरह सुलाते थे।

बाद में मैं ने उसे बताया कि वह लगभग पन्द्रह दिन तक मौत और ज़िन्दगी के बीच भूलता रहा था। कायदे से तो उसे मर जाना चाहिए था। और उसका इलाज करनेवाले डाक्टर ने कई बार साफ़ जवाब भी दे दिया था। मगर मैं ने और मैं की बूढ़ी माँ ने हिम्मत नहीं हारी थी। मैं की बूढ़ी माँ को बहुत-से पुराने चीनी नुस्खे याद थे, और वह उसने अरुण के बदन पर आज़माए थे। मगर सबसे बड़ी दवा तो शायद मैं खुद थी। उसने निश्चय कर लिया था कि वह अरुण को बचा लेगी। पन्द्रह दिन तक उसने अपने-आप को पूर्ण रूप से भुलाके ऐसी लगन से उसकी सेवा की थी। इसे सेवा नहीं कहना चाहिए। अगर जीवन किसी ऐसी न मरनेवाली शक्ति का नाम है जो एक आत्मा से दूसरी आत्मा में प्रवेश कर सकती है तो मैं ने सचमुच अपनी आत्मा को अरविन्द माली की आत्मा में घुला दिया था। ऐसे लगता था जैसे वह बदन नहीं रहा, आत्मा नहीं रही, औरत नहीं रही, बस एक कामना बन गई है ...
को ज़िन्दा रखने की—एक दीवार है मौत के सामने।
तरफ़ से आकर अरविन्द पर आक्रमण करती थी, ...

मैं चुप रहा।

जब तुम हागकांग में उतरे तो हमें तुम्हारे आने की सूचना न चुकी थी। मैं और आना तुमपर नजर रखने के लिए नियुक्त की गई।"

"और विक्टी थे—वह बिटनिक ?"

"वह भी हमारा आदमी है।"

"उसका नाम विक्की थे नहीं है। जोजफ पैकर्ड है। वह महीने में दो चक्कर हिन्दुस्तान के करता है। अपने हवाई जहाज में सोना और हीरे भरकर ले जाता है। मेरी माइक्रो फिल्म में उसका पूरा रिकार्ड है। विक्की थे मुझे ज्यादा देर तक धोखा नहीं दे सका। मगर आना सिंग ने मुझे सचमुच चकरा दिया।"

मे के चेहरे पर कामयाबी की एक मुस्कान आई।

"मैं उसे कुबड़ी औरत, पुलिस आफिसर की स्टेनो मिस टिंग के भेस में पहचान ही न सका।"

मे खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"तुम अब भी गलती पर हो। वह मिस टिंग नहीं थी। मिस टिंग सचमुच हागकाग पुलिस मे स्टेनो है। वास्तव में कुबड़ी और कुरूप है। उसे वास्तव मे शाकास ने चाय वगैरह पूछने के लिए तुम लोगो के पास भेजा था। मगर रास्ते मे आना ने मिस टिंग को किचन के एक कमरे मे बन्द कर दिया और उसका भेस खुद बदल लिया। आना भेस बदलने मे ऐसी महारत रखती है कि पूरे हागकाग में कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकता। बिचारी मिस टिंग तो बाद मे किचन के एक कमरे मे ठुसी हुई पाई गई। ऐसा दुख हुआ उनको कि दो महीने की छुट्टी ले ली है उन्होंने।"

"और हरबर्ट ?"

"उसको हमारे बॉस ने हागकाग से वापस इंग्लैंड भिजवा दिया है, क्योंकि वह अन्दर ही अन्दर तुमसे मिल गया था।"

"जेम क्या था ?"

"[illegible] था।"

"हां, उस क्लब के सिर्फ साठ मेम्बर हैं। '४१ मर्द, ११ अ
एक बार मैंने मजन नाइट क्लब में एक डाउन-टाउन वाले हम्बुग
लगभग साठ बरस के अंग्रेज को खरीदा। मेरी खरीदने की अ
तो तुम परिचित हो। वह एक बहुत अच्छी आदत है और
अपना हाथ हमेशा ऊपर रहता है। मर्द ने जरा भी चीं-चपड़ क
डालर उसके हाथ में थमाए और वापस।"

मैं हंसा, "तुम सचमुच बड़ी अजीब लड़की हो।"

"बड़ी अजीब तो नहीं हूं, मगर बहुत बुरी भी नहीं हूं। मुझे
अंग्रेज बहुत पसन्द आया था। याने उसकी बातें। बहुत लम्बा भी थ
और अपनी साठ बरस की उम्र के बावजूद अति स्वस्थ और चा
चौबन्द दिखाई देता था।" उसने मुझसे कहा

" 'क्या तुम हागकाग ६० की मेम्बर हो?' "

"मैंने कहा, 'मैंने तो आज ही इस क्लब का नाम सुना है।'

"वह घड़ी देखकर बोला, 'इस क्लब का एक मेम्बर परसों मर
है। आज आधे घण्टे के बाद उसकी जगह दूसरा मेम्बर चुन लिय
मैं तुम्हें मेम्बर बनाना चाहता हूं। हालांकि मरनेवाल
। और हमारे क्लब का नियम है कि मर्द की जगह मर्द ही

र बनता है। मगर तुम्हारी खातिर यह नियम भी बदलना
ा।'

"क्या तुम अपने क्लब के डिक्टेटर हो ?' मैंने उससे पूछा।

"मेरा सवाल सुनकर वह मुस्कराया। उसने मुझे कोई जवाब न
या। वह मेरी कमर में हाथ डालकर मुझे खामोशी से अपनी गाड़ी
क ले गया।' और जब गाड़ी चलने लगी तो बोला, 'डिक्टेटर तो
म हो जिसने पहली बार मिलकर मुझे अपने क्लब का नियम बद-
लना पड़ रहा है। फिर उसने गाड़ी में मुझे चूमने की कोशिश की
और मैंने उसे एक चांटा मार दिया और कहा, 'जो खरीदता है, दुक
ा ढंग वही तय करता है। इस बात को अगर जब-जब भूलेंगे,
एक चांटा पड़ेगा।'

"'बहुत अच्छा मादाम।' उसने अपना गाल सहलाते हुए कहा।"

"जानते हो वह कौन था ?" मैंने मुझसे पूछा। "हांगकांग ६० में
आकर मुझे मालूम हुआ कि वह सर रार्बट गैन था। आधे से ज्यादा
हांगकांग का मालिक, तीन जहाज़ी कम्पनियों का मालिक, सत्तर
नाइट क्लबों का मैनेजिंग डायरेक्टर। हांगकांग का कौन-सा व्यापार
है जिसमें उसका हाथ नहीं है। इस वक्त दुनिया के बहुत ही अमीर
अंग्रेज़ों में उसकी गिनती की जाती है। और इतना हंसमुख है
कि...।"

"और जानती हो कौन था वह जिसकी मौत के बाद तुम हांग-
कांग ६० की मेम्बर ली गई ?"

मैं हैरत से मेरी तरफ देखने लगी। उसकी आंखों में भय उतर
आया था।

मैंने कहा, "वह मीर जानी था। हमारे इण्टर-पोल का एजेंट
दस साल से वह हांगकांग ६० का मेम्बर था।"

"सचमुच तुम बहुत जानते हो। बहुत कुछ जानते हो। इस
लिए हमारे बॉस को तुमसे खतरा है। अगर तुमने उसकी बात न
मानी, तो वह कभी भी तुम्हें इस अन्तर-भू कमरे से बाहर
जाने देगा।"

अपने हाथ से उसे पहियों वाली आराम कुर्सी पर बिठाकर
र टैरेस की धूप में ले आया करेंगे, और रात को ड्रैगोन वाले
दानों के बीच में एक नक्काशी वाली चौकी पर सिगार मेज़ के
ने बैठकर मैं अपने बालों में तुम्हारे लिए खुशबू लगाया करूंगी।"

एकाएक वह गुनहगार लड़की एक नई नवेली दुल्हन की तरह
ा गई। मेरे चेहरे पर एक फीकी मुस्कराहट आई। मैंने उससे
हा, "और अगर मैं यह सब कुछ तुम्हारे लिए न कर सकूं, तो ?"

"तो मैंने बॉस से वादा किया है कि मैं तुम्हें खुद अपने हाथ से
ल कर दूंगी।"

कुछ देर हम दोनों के बीच खामोशी रही। ऐसी खामोशी कि
सलियों के पिंजरे में सांस भी चुभने लगी थी, आंखों में आंसू आने
गे थे।

"तुम रोते क्यों हो अप्रैल ?"

"मैं उस कुंवारी के लिए रोता हूं मे। जो तुम्हारे दिल के
अन्दर है, जिसे आज तक किसीने छुआ नहीं है, जो तुम्हारी बूढ़ी
मां के बालों की तरह पवित्र है।"

"वादा करो, मुझे छोड़ोगे नहीं।"

"वादा करता हूं।"

"कसम खाओ।"

"किसकी कसम खाऊं ?"

"जो तुम्हें ज़िन्दगी में सबसे प्यारा हो।"

"ऐसी तो कोई चीज़ नहीं।"

"तो फिर किसकी कसम खाओगे ?"

"उसकी, जो तुम्हें अब तक ज़िन्दगी में सबसे प्यारी रही

"मेरी मां।" मे एकदम बोल उठी।

"तो तुम्हारी मां के सफेद बालों की कसम खाता हूं, तुम्हें
नहीं छोड़ूंगा।"

मे खुशी से खिलखिलाकर हंस पड़ी। घड़ी देखकर
"एक बज रहा है, खाना खा लो। डेढ़ बजे बॉस आएंगे।

गुम हो गया। हर तरह की कोशिश के बाद लन्दन की पुलिस उसका
सुराग लगाने में असफल रही। हालांकि कत्ल के आधे दर्जन से ज्यादा
आंखों-देखे गवाह मौजूद थे। जो कातिल को अच्छी तरह से पहचान
सकते थे। संयोग से जहां यह कत्ल हुआ उसके ऊपर पहली मंज़िल
में जेम्स कथवर्ड की फोटोग्राफी की दुकान है। मौसम सुहाना था,
धूप खिली हुई थी। वह उस वक्त आकाश में उड़ते हुए सफेद बादलों
की तस्वीर उतारना चाहता था मगर उसे कत्ल की घटना की
तस्वीर मिल गई। जिसमें कातिल का चेहरा बहुत साफ नज़र आता
है।" इतना कहकर मैंने गौर से सर राबर्ट गेन की तरफ देखा।

"मगर उस तस्वीर का निगेटिव तो जला दिया गया था। औ
खुद जेम्स कथवर्ड उस तस्वीर खींचने के एक सप्ताह बाद गाय
हो गया।" सर राबर्ट गेन ने मुझसे कहा, "फिर उस बेचारे का कु
पता न चला।"

"हां, मगर वह अपनी लड़की रोज़ा को उस तस्वीर का
दूप दे गया था। वह डूप मेरी माइक्रो फिल्म में है।"

"फैक्ट नम्बर वन—आगे चलिए।" सर राबर्ट ने सन्तोषज
स्वर में कहा।

"जेम्स कथवर्ड ने बाकी सारी ज़िंदगी नाम बदलकर न्यूज़ी
में गुज़ारी मगर मरते समय उसने एक बयान दिया, जिसका
रिकार्ड मेरी फिल्म में है, और मरनेवाले के बयान का फिल्मी फो
—उसके दस्तखत के साथ···"

"फैक्ट नम्बर टू।"

"डेविड लैंग्ले जिस दिन मार डाला गया उसके दूसरे दि
वह अंग्रेज़ी पार्लियामेंट में बयान देने वाला था। जिसमें हां
की एक मशहूर जहाज़ी कम्पनी का कच्चा चिट्ठा खोलने
था। जिसके बोर्ड आफ डायरेक्टर्ज़ पर पार्लियामेंट के
मेम्बर थे। अगर डेविड लैंग्ले वह बयान दे देता, तो
अंग्रेज़ी हुकूमत को इस्तीफा देना पड़ता। और आने वाले
पर भी उसका बुरा असर पड़ता।"

'आगे बढ़ो।"

"लंदन से हम बम्बई आते हैं। मैक डुगल एण्ड मैक ड... के बम्बई की कम्पनी में थामस विल्सन नाम का एक ... मैनेजर था। उसकी शादी सारा मैक डफ से हुई थी। हिन्दु... बटवारे के दिनों में मिस्टर मैक डफ अकस्मात् झाड़-झाड़ में ... मार दिए गए, जबकि वह अपने एक पानी के जहा... निरीक्षण कर रहे थे। कातिल का कोई सुराग हाथ न लगा। ... दिनों इक्का-दुक्का अंग्रेजों के विरुद्ध हमले भी जारी थे और ... हिन्दुस्तान छोड़ रहे थे। इस गड़बड़ी के जमाने में यही समझा ... कि किसी हिन्दुस्तानी ने मिस्टर मैक डफ को अपने प्रतिकार ... निशाना बनाया है।

मिस्टर मैक डफ के मरने के बाद उसकी इकलौती लड़की स... मैक डफ जो अब सारा विल्सन बन चुकी थी, सीनियर पार्टनर ... रूप में इस समुद्री कम्पनी में सम्मिलित हुई। एक साल के बाद अच... मर थामस विल्सन का बम्बई हार्बर में याटिंग करते वक्त देहान्त हो ... गया। स्वर्गीय याटिंग करते पानी में डूब गए थे। सारा को उनकी मृत्यु का बहुत शोक हुआ। बम्बई छोड़ दिया और टोकियो में रहने लगी। और जैक गैन साइड से शादी कर ली। इस शादी के दो साल बाद सारा का भी देहान्त हो गया—सन्देहपूर्ण वातावरण में। मगर जैक गैन साइड के खिलाफ कोई सबूत नहीं मिल सका और उसे बाइज्जत रिहा कर दिया गया। जैक गैन साइड ने इस घटना के बाद टोकियो छोड़ दिया और अपना कारोबार एक वकील के सुपुर्द कर दिया। चार साल तक उसने जो जिन्दगी गुजारी उस पर आज तक पर्दा है। चार साल के बाद अचानक जैक गैन साइड बड़ी शान-शौकत से हांगकांग की व्यापारी दुनिया में एक सितारे ... मगर अब वह जैक गैन साइड नहीं रहा। डेविड मैक डफ, थामस विल्सन और सारा गैन साइड का ... मर राबर्ट गेन के नाम से मशहूर है।"

... होता है, तुमने ...

र्तें हरली है।" सर रावर्ट गेन ने मुस्कराकर कहा।
"मैं पिछले पांच साल से आपके निजी जीवन की खोज में लगा
।" अरुण ने जवाब दिया।
एक लम्बे समय की खामोशी के बाद सर रावर्ट गेन ने कहा,
"उस माइक्रो फिल्मी दस्तावेज की कीमत क्या लोगे ?"
अरुण बोला, "कीमत तो माल देखकर तय की जाती है।"
"तुम्हारा मतलब है," सर रावर्ट गेन एकदम आश्चर्य से
ले, "माइक्रो फिल्मी दस्तावेज इस वक्त भी तुम्हारे पास है !"
"हां।" अरुण बोला, "हालांकि मैं जानता हूं, मेरी बेहोशी
और बीमारी के दिनों में कई बार मेरे शरीर की तलाशी ली जा
चुकी है मगर वह दस्तावेज अब तक मेरे पास है। और अगर आप
किसी माइक्रो प्रोजेक्टर का बन्दोबस्त कर सकें तो मैं यह दस्तावेज
तो नहीं, हां उसकी असली तस्वीरें आपको दिखा सकता हूं। मगर
शर्त यह है कि आप अलग कमरे में बैठकर तस्वीरें देखें, मैं दूसरे
कमरे में अकेला रहूंगा।"

"मुझे तुम्हारी यह शर्त मंजूर है।" सर रावर्ट गेन ने अपनी
सीट से उठते हुए कहा, "और अगर तुम यह तस्वीरें दिखाने को
अभी चलना चाहो, तो अभी चलो।"

"चलिए, मैं तैयार हूं।" अरुण माली बोला।

"पहले तुम्हारी आंखों पर पट्टी बांधी जाएगी। सर रावर्ट गेन
ने कहा। अरुण माली की आंखों पर पट्टी बांधी गई। सर रावर्ट गेन
उसे एक बाजू से थामकर कमरे से बाहर ले गया। बाहर आकर कुछ
क्षणों के लिए रुका। फिर अरुण को महसूस हुआ कि उसका दूसरा
बाजू भी किसीने थाम लिया है। यह जाना थी। वह बड़े इत्मीनान
से उन दोनों के बीच चलता रहा। पूरा सफर बेआवाज था। अरुण
ने महसूस किया—पैरों तले गहरे मोटे गालीचे थे। ... रा.
आटोमैटिक थे। तीन बार वह लिफ्ट में गया। एक बार ऊपर,
बार नीचे, फिर एक बार ऊपर। रास्ते में सर रावर्ट
उससे बातें करता रहा। दो बार जीने पर चढ़ना पड़ा। एक

गई हुई रखाई गया है। हर कमरे में एक सिंगल बेड है और
न हुआ है। जी चाहे तो आराम कुर्सी पर बैठकर फिल्म
ए, जी चाहे तो बिस्तर पर लेटकर। जी न चाहे तो खिड़कियों
दें खोल दीजिए। हर कमरे में पूर्ण 'प्राइवेसी' का प्रबन्ध है।
लेट और बाथरूम की सुविधा भी है। खाने और पीने-पिलाने
का प्रबन्ध है। एक केबिन के लिए सिर्फ दो टिकट दिए
हैं। और इन तमाम सुविधाओं के बावजूद केबिन बनाम के
टिकटों की कीमत रात-भर के लिए सिर्फ दो सौ हांगकांग
र। यानी हांगकांग के एक उम्दा होटल के डबल बेड-रूम के
रे से भी सस्ता। यात्रियों को और क्या चाहिए ?"

"इसीलिए हांगकांग में यात्रियों का आना-जाना पिछले पांच
र्षों में चौगुना हो चुका है।" अरुण ने स्वीकार किया, "और
क अपना मुल्क है। एक बार जो यात्री अपने यहां आ जाए, वह
ही के कांटों पर लेटे हुए साधुओं, नीरा पीनेवाले नेता और
मोक्ष प्राप्त करनेवाले धर्मात्मा के लेक्चर सुनकर दूसरी बार
आने का इरादा नहीं करता।

तमाम फिल्मी तस्वीरें और दस्तावेज के अक्स देखने के बाद सर
राबर्ट शेन ने स्वीकार किया कि अगर यह पब्लिक में पेश किया
जाए तो मेरा जीना कठिन हो जाएगा। "मगर एक बात बता दो,
तुम इस माइक्रो फिल्म को छिपाकर कहां रखते हो ?"

"अपने कान के सूराख में।" मैंने हंसकर उससे कहा, "बहुत
आसान तरकीब है।"

"और अगर मैं तुम्हें मार डालूं ?"

"तो भी उसकी नकल सुरक्षित रहेगी। इसी हांगकांग में इण्टर
पोल का एक और एजेण्ट मौजूद है। जिसके पास इसकी दूसरी प्र.

--

गी सुविधाएं रखता है। हर कमरे में एक सिंगल बेड है और
दुनिया है। जी चाहे तो आराम कुर्सी पर बैठकर फिल्म
जी चाहे तो बिस्तर पर लेटकर। जी न चाहे तो खिड़कियों
गिरा दीजिए। हर कमरे में पूर्ण 'प्रायवेसी' का प्रबन्ध है।
न और बाथरूम की सुविधा भी है। खाने और पीने-पिलाने
का प्रबन्ध है। एक केबिन के लिए सिर्फ दो टिकट दिए
। और उन तमाम सुविधाओं के बावजूद केबिन क्लास के
कटों की कीमत रात-भर के लिए सिर्फ दो सौ हांगकांग
। याने हांगकांग के एक उम्दा होटल के डबल बेड-रूम के
से भी सस्ता। यात्रियों को और क्या चाहिए ?"

"इसीलिए हांगकांग मे यात्रियों का आना-जाना पिछले पांच
में चौगुना हो चुका है।" अरुण ने स्वीकार किया, "और
अपना मुल्क है। एक बार जो यात्री अपने यहां आ जाए, वह
के कांटों पर लेटे हुए साधुओं, नीरा पीनेवाले नेता और
णि प्राप्त करनेवाले धर्मात्मा के लेक्चर सुनकर दूसरी बार
का इरादा नहीं करता।

तमाम फिल्मी तस्वीरें और दस्तावेज के अक्स देखने के बाद सर
राबर्ट गेन ने स्वीकार किया कि अगर यह पब्लिक मे पेश किया
गए तो मेरा जीना कठिन हो जाएगा। "मगर एक बात बता दो,
तुम इस माइक्रो फिल्म को छिपाकर कहां रखते हो ?"

"अपने कान के सूराख में।" मैंने हंसकर उससे कहा, "अद्भुत
आसान तरकीब है।"

"और अगर मैं तुम्हें मार डालूं ?"

"तो भी उसकी नकल सुरक्षित रहेगी। इसी हांगकांग मे इण्ट-
पोल का एक और एजेण्ट मौजूद है। जिसके पास इसकी दूसरी .

[illegible] मिस्टर हर्बिन की साख बढ़ती है। जिस साख [illegible] इसे बनी मुसीबत से इस मुसाफ़िरी में भी लिया, [illegible] को सर राबर्ट ग्रेन रिश्ते में बारदात से आ[illegible] —
[illegible] के लिए, थोड़ी मात्रा के लिए। और इस तरह मुझ [illegible] को दाखिल करने के लिए एक-एक मैला [illegible] [illegible]!" सर राबर्ट ग्रेन की आँखें खुशी से चमकने लगी थी। [illegible] रहते हो कि मैं इतना बड़ा कारोबार एक मामूली [illegible] [illegible] कर दूं? मेरी पीठ पर सिटी आफ लन्दन के ऐसे-ऐसे [illegible] हैं जो मुझे किसी भी मुसीबत से बचा सकते हैं। सर [illegible] को कोई नहीं छू सकता।"

"यह मुझे भी मालूम था, इसीलिए मैंने मीर जानी के मामले में [illegible] आपको उलझाना स्वीकार किया था। हरबर्ट स्टब की मदद [illegible] इस मुकद्दमे की पब्लिक कार्रवाई में सर राबर्ट ग्रेन को यो [illegible] रूप से बेनकाब कर देना कि अंग्रेजी हुकूमत [illegible] मुकद्दमा [illegible] पर मजबूर हो जाती। जिस तरह क्रिस्टेन कीलर वाले किस्से [illegible] प्रोफ्यूमो को केबिनेट से अलग कर देने पर मजबूर हो गई [illegible]।"

"मगर अन्त में पूरा मामला दब गया था और स्टीफन वार्ड को आत्महत्या करनी पड़ी और असल घटनाएं पब्लिक के सामने न आ सकीं।" सर राबर्ट ग्रेन ने ज़रा कठोर होकर कहा, "इण्टर-पोल उस वक्त तक ठीक है, जब वह अकेले-दुकेले मुजरिमों या छोटे-मोटे कारोबार करनेवाले, कुछ लाख डालर की हैसियत रखनेवाले गैंग पर हाथ डालती है। यहां तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम कितनी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक शक्तियों पर हाथ डाल रहे हो। तुम एक मच्छर की तरह मसल दिए जाओगे। तुम और तुम्हारी इण्टर-पोल "

"मेरे सामने भी सिर्फ एक छोटी-सी अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सी का सवाल नहीं है, एक कौम के भविष्य का सवाल है। जिसे सोने के [illegible] आ रहा है।" अरुण मानी को भी

[illegible] है। मेरी ज़िन्दगी ख़त्म कर देने से तुम्हारे [illegible] के [illegible] किसी तरह [illegible] नहीं किए जा सकते। सिर्फ मैं तुम्हें इस [illegible] को किसी भी [illegible] के [illegible] हूं, जिससे आप बचने के और तुम हमेशा के लिए सुरक्षित हो सकते हो।"

सर रार्बट मेन ने [illegible] बेतुकी निगाहों और [illegible] हो गए। कहने लगे, 'तुम किसी रकम [illegible], इस [illegible] मैं दस्तख़त कर दूंगा।'

'रुपया नहीं चाहिए, सर रार्बट मेन!'

'फिर क्या चाहिए?' वह रैगन को अजीब तरह देखने लगा।"

[illegible] मुस्तकिल [illegible] की [illegible] करता हूं, और तुम्हें यहां अपनी [illegible] सही-सलामत ले जाने की [illegible] देता हूं। तुम ज़िन्दगी भर ऐश व आराम से रह सकते हो, अपने वतन में।"

"मैं महज़ अपने ऐश व आराम को लेकर क्या करूं, सर रार्बट मेन'''सिर्फ हागकाग से तुम्हारे गैंग के द्वारा भारत में अस्सी करोड़ का सोना हिन्दुस्तान में हर साल स्मगल होता है और कोई बीस करोड़ के जवाहरात—लगभग एक अरब की हिन्दुस्तानी करेन्सी चोरी-छिपे हर साल बाहर चली जाती है। इससे हमारे मुल्क की अर्थ-व्यवस्था पर बुरा असर पड़ता है। यह सोना और हीरा सिर्फ हाथ की अंगूठियों में, गले के लाकेटों और लोहे की तिजोरियों में बन्द हो जाता है और मुल्की तिजारत के किसी काम नहीं आता है। इसी तरह हर साल एक अरब रुपये की कड़ी मेहनत कब्र में गाड़ दी जाती है। एक अरब रुपया यों चोरी-छिपे बाहर स्मगल हो जाने से हमारे मुल्क की करेन्सी का भाव भी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कम हो जाता है। यह सिर्फ एक आदमी के ऐश व इशरत का सवाल नहीं है। तुम एक पूरी कौम के भविष्य को स्मगल कर रहे हो।"

"मुझे तुम लोगों से कोई हमदर्दी नहीं है। मैंने पहले ही तुमसे कहा था—कोई मानवता का लेक्चर नहीं होगा। मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूं कि सत्तर-अस्सी करोड़ के कारोबार पर लात मार दूं। सर रार्बट मेन के धन्धे से लन्दन की शेयर-मार्केट चलती है, पौंड का भाव

ञित होता है, मिस्टर स्टर्लिंग की शान बढ़ती है। जिस शान
शौकत को हमने अपनी मूर्खता से दस शताब्दी में खो दिया,
ी शान व शौकत को सर राबर्ट गेन फिर से वापस ले आएगा —
नी कौम के लिए, अंग्रेज़ी साम्राज्य के लिए। और इस गई-गुज़री
न व शौकत को वापस लाने के लिए एक-एक पैसा हिन्दुस्तान
आएगा।" सर राबर्ट गेन की आँखें खुशी से चमकने लगी थीं।
गैर तुम चाहते हो कि मैं इतना बड़ा कारोबार एक माइक्रो फिल्म
लिए बन्द कर दूं? मेरी पीठ पर सिटी आफ लन्दन के ऐसे-ऐसे
दगुरुप हैं जो मुझे किसी भी मुसीबत से बचा सकते हैं। सर
बर्ट गेन को कोई नहीं छू सकता।"

"यह मुझे भी मालूम था, इसीलिए मैंने मीर जानी के कत्ल में
पने-आपको उलझाना स्वीकार किया था। हरबर्ट स्टव की मदद
मैं इस मुकद्दमे की पब्लिक कार्रवाई में सर राबर्ट गेन को यो
स्ट रूप से बेनकाब कर देता कि अंग्रेज़ी हुकूमत तुमपर मुकद्दमा
लाने पर मजबूर हो जाती। जिस तरह क्रिस्टेन कीलर वाले किस्से
वह पो फ्रोमो को केबिनेट से अलग कर देने पर मजबूर हो गई
ी।"

"मगर अन्त में पूरा मामला ढक गया था और स्टीफन वार्ड
ो आत्महत्या करनी पड़ी और असल घटनाएं पब्लिक के सामने
ा आ सकीं।" सर राबर्ट गेन ने ज़रा कठोर होकर कहा, "इण्टर-
गेल उस वक्त तक ठीक है, जब वह अकेले-दुकेले मुजरिमों या
छोटे-मोटे कारोबार करनेवाले, कुछ लाख डालर की हैसियत
रखनेवाले गैंग पर हाथ डालती है। यहां तुम्हें मालूम नहीं है कि
तुम कितनी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक शक्तियों पर हाथ डाल
रहे हो। तुम एक मच्छर की तरह मसल दिए जाओगे। तुम और
तुम्हारी इण्टर-पोल ..."

"मेरे सामने भी सिर्फ एक छोटी-सी अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सी का
सवाल नहीं है, एक कौम के भविष्य का सवाल है। जिसे सोने के
छोटे-छोटे टुकड़ों के बदले बेचा जा रहा है।" अरुण मानी को भी

व गुस्सा आने लगा था। माइक्रो फिल्में देखकर सर राबर्ट
मकी आंखों पर पट्टी बंधवाकर उसे वापस उसी कमरे में ले ब
।, जहां से वह उसे ले गया था। और अब दोनों एक छोटी-
ज के आमने-सामने बैठे हुए बातें करने में व्यस्त थे।

गर राबर्ट गेन ने अपनी जेब से सोने का एक सिगरेट-के
कालकर एक सिगरेट अरुण माली को पेश किया। अरुण ने अप
य से सिगरेट निकालकर कहा, "मैं सिर्फ अपना ब्रांड पीता हूं
ना कहकर उसने अपना सिगरेट-केस खोलकर उसमें से एक सि
रट निकाला, और अपने सिगरेट-केस में लगे हुए लाइटर से र
राबर्ट गेन का सिगरेट सुलगाया।

सर राबर्ट गेन बोले, "मैं तुम्हें इन दोनों दस्तावेजी फिल्मों
लिए दो लाख पौंड नकद दे सकता हूं।"

"दो लाख भी नहीं, दस लाख भी नहीं, बीस लाख भी नहीं।
अरुण माली ने उससे कहा।

"बीस लाख पौंड में तो मैं तुम्हारे इन्टर-पोल के सारे एज
खरीद सकता हूं।" राबर्ट गेन ने मुस्कराकर कहा, "फिर भी, तुम्हा
या मेरे कहने से अब यह धन्धा तो बन्द होगा नहीं। कोई और बा
करो। मैं अगर अपनी जान बचाने के लिए कुछ दिनों के लिए य
धन्धा बन्द भी कर दूं तो मुझे भी खत्म कर दिया जाएगा।"

"वही तो मैं जानना चाहता हूं कि तुम्हारा दूसरा पार्टनर कौन
है?"

"दूसरा पार्टनर!" सर राबर्ट गेन के चेहरे पर भय की पर-
छाइयां पड़ने लगीं।

"तुम्हारा सीनियर पार्टनर।" अरुण माली ने उससे कहा,
"अंग्रेज अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कहीं भी इस पोजीशन में नहीं रहे
कि गुट को सीनियर पार्टनर की हैसियत से मनवा सकें। इसलिए
उन्हें किसी दूसरे को पार्टनर लेना ही पड़ता है। यही हाल व्याप-
रिक क्षेत्रों का है।"

अरुण माली खामोश हो गया। गौर से सर राबर्ट गेन की आंखों

देने लगा। फिर आगे झुककर धीरे से बोला :
"चलो, मैं एक और प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखता हूं। मुझे अपने सीनियर पार्टनर से मिलवा दो, मैं दोनों फिल्मी दस्तावेज तुम्हें दे दूंगा।"
इतना कहकर अरुण ने अपने बाएं कान की लौ पर अपनी हथेली रखी और सिर को टेढ़ा करके और बार-बार हिलाकर उसमें से मटर के दाने के बराबर एक माइक्रो फिल्म निकाली और फिर उसी तरह से दूसरे कान से भी। और फिर दोनों फिल्मों को अपनी हथेली पर रखकर सर रावर्ट गेन से कहने लगा, "तुम यह दोनों माइक्रो फिल्में ले सकते हो, अभी। और जब तुम मुझे अपने सीनियर पार्टनर से मिलवा दोगे, और मुझे हांगकांग से सुरक्षित रूप से बाहर भिजवाने का बन्दोबस्त कर दोगे तो मैं तुम्हें इनकी दूसरी कापियां भी दे दूंगा—चलो, मुझे अपने सीनियर पार्टनर से मिलवाओ भी, मुझे सिर्फ उसका नाम बता दो। सिर्फ नाम।"
"मेरा कोई सीनियर पार्टनर नहीं है।" सर रावर्ट गेन ने गुस्से भड़ककर कहा।
"हर साल डेढ़-दो अरब डालर की हेरोइन और अफीम के सिगरेट और दूसरे मादक द्रव्य हांगकांग से अमरीका को स्मगल किए जाते हैं। इतनी अफीम हांगकांग की धरती पर नहीं उगाई जा सकती, इतनी अफीम उगाने के लिए हांगकांग के बाहर में जमीन नहीं है। इतनी अफीम उगाने के लिए हजारों-लाखों एकड़ जमीन चाहिए। इतने बड़े जमीन के टुकड़े पर अफीम उगाने के लिए किसी एशियाई हुकूमत की साझेदारी जरूरी है। और इतने बड़े कार्य को छिपाकर रखना किसी बहुत बड़े फायदे के बिना कोई हुकूमत क्यों करेगी ?"
"क्या तुम्हारा इण्टर-पोल किसी हुकूमत को गिरफ्तार कर सकता है ?"
"गिरफ्तार तो नहीं कर सकता, उसपर उंगली तो रख सकता है। यह भी अगर सम्भव नहीं तो उस गैंग के मेम्बरों को तो पकड़ सकता है जो इस धन्धे में लगे हुए हैं। चाहे उनके सम्बन्ध गुप्त रूप से किसी भी हुकूमत या उसके किसी कार्यालय से हों। या किसी

दुश्मन के बड़े कार्यकर्ता से मैं इतना जरूर जानता हूं कि
भी दुश्मन को पकड़ना या उसके विरुद्ध कोई नुकसान पहुंचाने
सबूत पेश कर देना बिलकुल सम्भव नहीं है। मगर उस
व्यक्ति को पकड़े जा सकते हैं जिनके द्वारा यह काम होता है।"

"मेरा कोई सीनियर पार्टनर नहीं है।" सर राबर्ट गेन ने
हुए कहा, "तुम्हें आज शाम के आठ बजे तक मेरे आफर के सम्ब
में कोई न कोई फैसला कर लेना चाहिए। अगर तुमने मेरा आ
स्वीकार कर लिया तो हम दोनों इकट्ठे डिनर खाएंगे।"

"वरना ?" अरुण माली ने पूछा।

"वरना मैं अकेला डिनर खाऊंगा और तुम्हारी लाश को समु
की मछलियां खाएंगी।"

वह मुड़कर जाने ही वाला था कि एक चीनी नौकर ने आकर उसके कान में कुछ कहा। जिसे सुनकर सर राबर्ट गेन के चेहरे पर मौत की एक लहर दौड़ गई। उसने मेरी तरफ देखकर कहा:

"क्या तुम सचमुच मेरे सीनियर पार्टनर से मिलना चाहते हो ?"

मैंने इकरार में सिर हिलाया।

"तो मेरे साथ आओ।"

चीनी नौकर ने मेरी आंखों पर पट्टी बांधी, और हम लोग फिर कमरे से बाहर निकले। मगर अब के दूसरी ओर से गए। कुछ देर तक मुझे भूल-भुलैयों में गुजारने के बाद एक कमरे में ले जाकर खड़ा कर दिया गया और मेरी आंखों से पट्टी उतार दी गई। यह एक 'बार' के रूप का कमरा था। एक कोने में बार लगी थी, और तरह-तरह की शराबें, बार के काउण्टर के सामने ऊंचे-ऊंचे स्टूल लगे थे, ऊदे रंग के पर्दे थे, ऊदे रंग का गालीचा था, हल्के ऊदे रंग

ी मेज और कुर्सियां थी। बहुत कीमती फानूस थे, मगर मध्यम-
ध्यम रोशनियां देते हुए।

बार के एक तरफ एक लम्बी मेज पड़ी थी। उसपर कुछ
ामान कपड़े से ढका हुआ पड़ा था। बार पर मे मौजूद थी।

कमरे में एक कोने की खिड़की के करीब एक मेज पर तीन
ाली गिलास रखे हुए एक चीनी बैठा था। उसकी आयु लगभग
च्चीस वर्ष की हो, पचास की भी हो सकती थी। उसका चेहरा
च्चों की तरह मासूम नजर आता था। बाल गहरे सियाह, चेहरे
ी ज़र्दी मे एक अजीब हरेपन का अनुभव होता था। नाजुक-से
ाथ-पाव, आंखों पर ऐनक, शक्ल व सूरत से वह कोई अपने विचारो
 खोया हुआ-सा विद्वान मालूम होता था।

जब मेरी आंखों से पट्टी उतारी गई, तो मैं उसे और वह मुझे
ौर से देखने लगा।

"गोगो काई।" एकाएक मैं उसे पहचानकर चीखा और
सके गले से लग गया। वह भी मेरे गले लगा, मगर बड़े कायदे
ौर सलीके से, और भाव की गर्मी से गद्‌गद हुए बिना।

बहुत समय बीता। जब मैं शंघाई के इन्स्टीट्यूट में चीनी भाषा
ीखता था, मुझे एक बार पीकिंग जाना पड़ा था। पीकिंग के
तखो वाले रेस्टोरेंट मे मेरी भेंट गोगो काई से हुई थी। और बहुत
ल्द हम दोनो दोस्त बन गए थे।

कहते हैं पीकिंग का बतखो वाला रेस्टोरेंट कोई आठ सौ वर्ष
ुराना है। और वहां हर सालन बतख के गोश्त से तैयार किया
ाता है। डक-रेस्तरां में डक के सिवाय और कुछ नहीं मिलता,
ौर किसी चीज की जरूरत भी महसूस नहीं होती। पीकिंग-डक
ा दुनिया मे जवाब नही है। तन्दूर मे भुनी हुई पीकिंग-डक का
ोश्त मलाई से भी ज्यादा मुलायम और मजेदार होता है। उसके
ाथ हल्के नशे वाली चीनी शराब हो या फिर अगर नशा ज्यादा
ाहिए तो मोताई की सफेद शराब हो। जिसे मैं मोताई की जगह
'मौत आई' कहा करता हू। इतनी तेज और कड़वी शराब है कि

पहला घूंट हलक में उतरते ही उच्छ्र महसूस होने लगता है।
शराब सिर्फ नौजवानी ही में पी जा सकती है। जब सारे न
और सुन्दर होते हैं और सारी दुनिया को जीतने का विचार स
मालूम होता है।

मैं और गोगो काई अपनी नौजवानी के दिनों में घंटों
रेस्टोरेंट में बैठे अपनी जिन्दगी की योजनाएं बनाया करते। दु
की उन्नति, एशिया की कंगाली, इन्कलाब की जरूरत···दिन
दिमाग आकाश पर उड़ते थे···अब इतने बरसों के बाद नौजव
का पूरा युग और जवानी का आधा युग गुजारकर मैं गोगो का
फिर मिल रहा था। जिन्दगी कितनी बदल गई थी! मैं इंटरन
का एक नुच्चिया एजेण्ट था और गोगो काई···?

"गोगो काई, क्या तुम ही मर राबर्ट सेन के पार्टनर हो
मैंने अचानक उससे पूछा।

काई बड़ी गम्भीरता से बोला, "मैं पार्टनर नहीं हूं। मैं मालि
हूं। यह होटल मेरा है।"

"मगर मकान तो अंग्रेज का है?"

"मुझे इसकी जरूरत है। इसलिए यह हालकांग पर महाद
जब चाहूंगा।"

'बड़ी खुशी की बात है, तुम इतने बड़े आदमी बन गए हो।'
मैंने उसकी बात काटकर कहा, "मुझे मालूम नहीं था, मेरी नौजवानी
का दोस्त, पीकिंग रेस्टोरां में इन्कलाब की बातें करनेवाला
मेरा नौजवान दोस्त गोगो काई इतना बड़ा धन्धा शुरू करेगा।"

"मैं आज भी इन्कलाबी हूं।" काई ने अभिमान-भरे स्वर में
कहा।

"इन्कलाब धरम के द्वारा? मैंने कटाक्ष किया।

काई ने एक के बाद एक ऐसी तेजी से दो चांटे मेरे गालों पर
· किए कि मैं बौखला गया। "बदजात कुत्ते!" उसने गुस्से से

··· खामोश रहो। मैं तुम्हें खत्म कर-

भाता रहा। फिर मैंने कहा, "अधिक चांटे के डर के बावजूद कुछ बातें कहनी ही पड़ेंगी, कुछ बातें पूछनी पड़ेंगी···मुझे साम्राजी कुत्ता कहने से पहले इस बात पर भी विचार कर लिया होता कि तुम्हारा अंग्रेज पार्टनर कोई सोशलिस्ट नहीं है। न ही अमरीका के स्कूल के बच्चों में हेरुन के सिगरेट बांटकर और उन्हें चरस और चण्डू की लत लगाकर तुम कोई क्रान्तिकारी काम कर रहे हो। अलबत्ता हर साल डेढ़-दो अरब डालर की कीमती रकम जरूर लूट लेते हो। जिसका हिसाब तुमसे मालूम नहीं कौन लेता है? और यह रुपया किस क्रांति के काम में खर्च होता है? जी चाहता है यह बातें भी पूछ लूं अपने पुराने डक-रेस्टोरेण्ट के इन्कलाबी से?"

"हम एक नया इन्कलाब शुरू कर रहे हैं, इस इन्कलाब का तूफान पूर्वी एशिया से उठेगा। जहां पर जिन्दगी की सबसे पुरानी सभ्यता ने जन्म लिया था, वहीं से जिन्दगी की सबसे नई सभ्यता भी जन्म लेगी।"

गोगो काई की आवाज में वही पुरानी तीव्रता आती जा रही थी: "इस तूफान की लपेट में पूर्वी एशिया के सब देश आ जाएंगे। जापान, फिलिपाइन, इंडोनेशिया, मंगोलिया, साइबेरिया, थाईलैंड, इंडोचाइना, मलाया, बर्मा से यह तूफान चलता-चलता एक दिन हिन्दुस्तान को भी अपनी लपेट में ले लेगा। और तुम्हारी गली-सड़ी गांधीवाई सभ्यता को मिट्टी में मिला देगा। पूरे एशिया पर छा जाएंगे हम। और जिस दिन हम एशिया पर छा जाएंगे, उसी दिन सारी दुनिया हमारी होगी। जब तक हम क्यों न अपने दुश्मनों को कमजोर करें? अफीम से, चरस से या गांजे से या किसी और जहर से। इसमें क्या फर्क पड़ता है? अगर हम उस पीढ़ी को कमजोर कर देंगे जिसे एक दिन हमारे ही विरुद्ध लड़ाई में इस्तेमाल किया जाएगा, तो इसमें क्या बुराई है। और रुपया अलग मिलता है, जिसे हम एशिया में इन्कलाब का बीज बोने में खर्च करते हैं—या न्यूक्लीयर बम बनाने में।"

"इन्कलाब को भी तुमने गेहूं का बीज समझ रखा है? मैंने में

बीज बो दिए, फसल काट ली। सारी दुनिया पर हुकूमत करने
सवाल ? तो यह सपना तुमसे पहले बहुतों ने देखा है। और उ
परिणाम भी तुम्हारे सामने है।" अब अरुण को भी क्रोध आ रहा था
रहा गांधीवाद, तो मुझ ऐसे अधिक राजनैतिक सूझ-बूझ न रख
वाले आदमी को भी गांधीवाद की बहुत-सी बातें प्रिय नहीं है
मगर गांधी मरते-मरते भी एक बात स्पष्ट कर गया और वह
कि बुरे रास्ते से कोई अच्छा लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता
मुझे मालूम है, तुम यह नहीं मानोगे। एक जमाना था, मैं भी न
मानता था और रास्ते और लक्ष्य की बहस को बेकार हास्यपू
बकवास से ज्यादा महत्त्व नहीं देता था। मगर आज नू-क्लीय
बमों के निर्माण के बाद किसी हद तक दुनिया की बहुत बड़ी-बड़ी
ताकतें भी यह सोचने पर मजबूर हो गई हैं कि क्या इन नू-क्लीय
रास्तों से वह लक्ष्य प्राप्त हो सकता है जो उनके मस्तिष्क में है
गांधी सच कहता था कि बुरे रास्ते अच्छे से अच्छे लक्ष्य को भी
तबाह कर देते हैं। जिस तरह अफीम और दूसरे मादक द्रव्यों के
धन्धे ने तुम्हारी बुद्धि को नष्ट कर दिया है। अच्छा यह बताओ,
मेरे दोस्त। तुम्हारे सम्बन्ध माओ त्से तुंग की हुकूमत से है या
च्यांग काई शेक की हुकूमत से ?"

"मैं किसीका गुलाम नहीं हूं। मैं खुद अपने-आपमें एक
इन्स्टीट्यूशन हूं। हांगकांग में दिन को अंग्रेज हुकूमत करता है,
रात को गोगो काई। रहे सम्बन्ध, तो मेरे सम्बन्ध दोनों चीनी
हुकूमतों से अच्छे हैं।" गोगो काई ने बड़े गर्व से तनकर जवाब
दिया। "जहां तक 'सेलेस्टियल एम्पायर' का सम्बन्ध है, चीन की
बुनियादी पालिसी एक है…।"

"हां इसका अनुभव मुझे किसी हद तक उस वक्त भी हुआ था
जब नेफा और एकसाई चीन के भारत-चीनी झगड़े के वक्त च्यांग-
काई शेक ने माओ त्से तुंग का समर्थन किया था।" अरुण भाटी ने
कहा।

मैं ने आकर तीनों खाली जाम शराब से भर दिए। उसकी आंखें

तीखी थी और होंठ कांप रहे थे। मगर वह मुंह से कुछ नहीं बोली। फिर रावर्ट गेन ने जम्हाई लेते हुए कहा, "मुझे राजनीति से बहुत नफरत है।"

"अंग्रेजों ने राजनीति को कभी समझा ही नहीं।" गोगो काई ने बड़ी घृणा से कहा, "इसलिए उनकी हुकूमत एशिया में दो सौ साल से ज्यादा नहीं टिक पाई। उन्होंने राजनीति को भी केवल व्यापार के लिए उपयोग किया।"

"और तुम व्यापार को भी राजनीति के लिए उपयोग कर रहे हो।"

गोगो काई को अरुण माली का यह वाक्य पसन्द आया और उसके पीछे छिपा हुआ प्रशंसा का भाव भी। वह ज़रा-सा मुस्कराया, थोड़ा-सा पिघला। शराब का एक घूंट पीकर बोला, "आदमी तुम अच्छे हो, अगर भारतीय न होते।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है ?" मैंने उससे कहा।

"मैं अपने गिरोह में किसी भारतीय को नहीं रखता, यह मेरा पहला सिद्धान्त है।" गोगो काई ने अरुण माली की ओर देखकर कहा, "अगर तुम भारतीय न होते तो मैं तुमको अपने गिरोह में रख लेता।"

"धन्यवाद, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है।"

"ज़रूरत तो तुम्हारी भी मुझे नहीं है।" गोगो काई ने प्रत्युत्तर दिया।

"मेरी ज़रूरत तो है।" अरुण माली ने बड़े धीरे से कहा, "मैंने अब वह तमाम सबूत प्राप्त कर लिए हैं, वे तमाम सूचनाएं मेरे पास मौजूद हैं, जिनकी रोशनी में न सिर्फ हमारी हिन्दुस्तानी हुकूमत मनचाही कार्रवाई कर सकती है बल्कि अंग्रेजी हुकूमत को भी मजबूर कर सकती है कि वह हांगकांग के इस खुफिया अड्डे को बरबाद करे। वह आदमी मैं हूं।" अरुण ने अपना सीना ठोककर जवाब दिया।

"तुम इस अन्तर-भू अड्डे में जिन्दा वापस नहीं जाओगे।" गोगो काई बोला।

"मैंने इस बात का प्रबन्ध पहले कर लिया था कि मेरे मरने से इंटर-पोल को इस खुफिया गैंग को खत्म करने में कोई कठिनाई न हो। वह तमाम सबूत मैंने एक माइक्रो फिल्म में एकत्र कर लिए हैं। वह माइक्रो फिल्म मैं तुम्हारे पार्टनर को दिखा चुका हूं। वह माइक्रो फिल्म क्या है, एक छोटा-सा टाइम बम है, मेरे मरने के बाद फटेगा। तुम सबको खत्म कर देगा।"

"मैं उस माइक्रो फिल्म को देख चुका हूं। वह सबूत तुम्हारे शरीर के साथ ही खत्म हो जाएगा।" काई ने जवाब दिया।

"हांगकांग में उसकी एक कापी और भी है।" अरुण माली ने कहा।

"वह भी मेरे पास है, मैंने हासिल कर ली है।" गोंगो काई बोला।

"दिखा सकते हो?"

"जरूर।" कहकर गोंगो काई अपनी कुर्सी से उठा और कोने में रखी हुई उस मेज की तरफ बढ़ा जिसपर कुछ सामान कपड़े से ढका हुआ रखा था। उसने हम दोनों को उस मेज की तरफ आने का इशारा किया। और जब हम करीब पहुंचे तो उसने मेज पर से कपड़ा झटक दिया।

एक दबी-सी चीख अरुण माली के मुंह से निकल गई। हैरत से सर राबर्ट का मुंह खुला का खुला रह गया।

मेज पर हर्बर्ट स्टब की लाश पड़ी थी।

"मैं इतना मूर्ख नहीं हूं कि तुम्हारे और पुलिस के बिछाए हुए जाल में आसानी से आ जाऊं।" गोंगो काई शान से बोला, "मेरा पार्टनर तो मूर्ख है। सेन ने हर्बर्ट को यहां से ट्रांसफर करा के समझा था, उसने बहुत बड़ी चाल चली है। वह यह नहीं जानता था कि स्टब का ट्रांसफर उसके प्रभाव और पहुंच से नहीं हुआ है, इंटर-पोल के [illegible] था। स्टब लन्दन नहीं जा रहा था। वह पेरिस जा रहा [illegible] इंटर-पोल के केन्द्रीय दफ्तर में यह माइक्रो फिल्म लेकर..."

गोगो काई ने अन्दर की जेब में हाथ डालकर अपनी हथेली ोली, मुझे माइक्रो फ़िल्म की दूसरी प्रति दिखाई। फिर पिस्तौल निकालकर बोला, "अब तुम दोनों मरने के लिए तैयार हो जाओ। आखिरी दुआ पढ़ लो।"

अरुण का चेहरा सुन्न हो गया। वह बार-बार पर्दे हटाने की ओर ही देखता था। आज कई दिनों से किसी बड़े मिशन में अगर आगे लगी हुई मालूम होती थी। अब माथे से निकलकर भागने के माथे पर जमी हुई पानी की बूंदें रिसने लगी थीं। मानो वो हर तरफ़ बेकार गई थीं।

उसने कहा, "मरने से पहले एक आखिरी जाम पी लें।"

"ज़रूर," काई बोला, और उसने मैं गो कहा कि वह तीन जाम भर दे। उसने जाम भर दिए। एक ही घूंट में तीनों ने तीन जाम खाली कर दिए।

"अब एक सिगरेट।" अरुण खाली जेब में हाथ डालकर अपना सिगरेट-केस निकालते हुए बोला।

"जितना ही वक्त ले लो, मौत तो लाज़िमी है।" काई ने कटाक्ष-भरे स्वर में कहा।

सिगरेट-केस खोलकर खाली ने उसमें से एक-एक सिगरेट उन दोनों को पेश किया, एक खुद लिया। सिगरेट-केस बन्द किया। सिगरेट-केस के लाइटर का बटन दबाते हुए उसने गोगो काई के सिगरेट को सुलगाना चाहा।

गोगो काई का चेहरा सिगरेट-केस के लाइटर पर झुक गया।

अरुण ने बटन दबाया।

एक भयानक शोला एक भयभीत आवाज़ के साथ उठा और गोगो काई के चेहरे के साथ लिपट गया। गोगो काई चीख मारकर पीछे हटा। पिस्तौल उसके हाथ से नीचे गिर गया। काई अपने जलते हुए चेहरे को बचाने के लिए अपने दोनों हाथ इस्तेमाल कर रहा था। गेन का ध्यान काई की ओर देखकर और अपनी तरफ़ से ८ देखकर अरुण ने उस एक पल के समय में इतने ज़ोर का घूंसा

मेकर विक्की के गिटार के तारों को छू देती। ऐसा लगता जैसे कोई मछली उछलकर समुन्दर से निकली, फिर पानी में डूब गई। ऐसे वह स्वर डूब जाते और फिर समुन्दर पर सन्नाटा छा जाता।

"अब कितनी दूर है ?" विक्की ने एक लम्बी मुद्दत की लम्बी खामोशी के बाद पूछा।

हम लोग बन्दरगाह से काफी दूर निकल आए थे। हांगकांग गायब हो गया था। मगर मैं अभी तक मोटर लांच को किनारे-किनारे घुमाकर ले जा रहा था। अंधेरा बढ़ गया था मगर तट के किनारे छोटी-छोटी पहाड़ियों के कटाव नजर आने लगे थे।

मैंने कहा, "अगले मोड़ पर वह जगह नजर आएगी।" फिर अपनी घड़ी देखकर मैंने कहा, "कोई दस मिनट में हम वहां पहुंच जाएंगे।"

विक्की चुप हो गया। आना ने अपनी एक उंगली से उसके गिटार को छेड़ा। सुर फिर एक मछली की तरह उछला ...।

मैंने कहा, "आना, यह इण्टर-पोल वालों की सरासर ज्यादती है कि उन्होंने मुझे अपने एक इतने महान एजेण्ट का सुराग नहीं दिया, जो हमारे दुश्मनों के गैंग में घुसकर मुखबरी कर रहा था।"

मेरा इशारा मुड़ वाला की तरफ था, आना समझ गई। उसकी आंखें बन्द-सी होने लगीं। उसके होंठों पर एक हल्की-सी मुस्कान आई। वह अपनी उंगलियां विक्की के खामोश चेहरे पर फेर रही थी।

अगर आना हमारी मदद न करती तो मेरा, मे का और मे की बुढ़िया मां का उस भूगर्भ-अड्डे से निकलना कितना असम्भव था।

"तुम तो इण्टर-पोल के कायदे से वाकिफ हो।" विक्की बोला, "हर एजेण्ट को उतना ही दूसरे एजेण्ट से परिचित ... जितना उसके लिए जरूरी हो।"

"मगर मैं तो इस आपरेशन का इंचार्ज था। मेरे लिए एजेण्ट का जानना बहुत जरूरी था। और, जाने दो।

कुछ समय के लिए मैं चुप रहा, क्योंकि मोटर लांच को

जाऊंगा, माँ को साथ ले जाऊंगा। उसे सुरक्षित रूप से कलकत्ते
रखकर मैं के साथ पेरिस वापस जाऊंगा। पेरिस में आठ से प
रोज के बाद हम सारे इकट्ठे मिलेंगे।"

"पेरिस !" आना ने प्यार-भरी निगाहों से विक्की की त
देखा और बोली, "कोई गीत गाओ विक्की···।" फिर एक
उसका हाथ रोककर बोली, "अभी नहीं···बस अब वह ज
करीब आ रही है। स्पीड धीमा करो जल्दी ···।"

हल्की-सी खग-खग के बाद एक छोटा-सा मोड़ काटकर
एक पहाड़ी तट पर पहुंच गए जो तीन तरफ छोटी-छोटी पहा
से घिरा हुआ था। यहां समुन्दर पर भी सन्नाटा था और पहा
पर भी। बीच वाली पहाड़ी की चोटी पर एक मकान की आ
सी दिखी। तट से ऊपर पहाड़ की चोटी तक पत्थर काट-का
एक छोटा-सा जीना बनाया गया था। ऊपर जाने का बस
एक रास्ता था।

मैंने घड़ी देखी। धीरे से कहा, "अभी दस मिनट बाकी हैं
आना और विक्की दोनों चुप रहे।

रात के सन्नाटे में कहीं पर कोई आहट न थी, कोई रो
न थी। मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

"तुम्हारे ख्याल में यह जगह बिल्कुल सुरक्षित है ?"

"इससे सुरक्षित जगह तो हांककांग में नहीं मिल सकत
आना ने मुझे इत्मीनान दिलाते हुए कहा। हांगकांग के चप्पे
पर कार्ड और गैन के आदमी तुम्हारी तलाश में व्यस्त हैं। मेरे
दोस्त ने यहां पर अपना एक कन्ट्री हाउस बना रखा है
विश्वास के योग्य है। मगर मैंने उसे भी विश्वास के
नहीं समझा। यहां का चौकीदार मुझे अच्छी तरह से पहचान
उसे कुछ डालर देकर मैंने बड़े स्वाभाविक रूप से कह दि
कि मेरे रिश्तेदार हैं। कुछ दिनों यहां रहेंगे। जब तक
मैं उनके रहने का बंदोबस्त कर लूंगी। सब जानते हैं कि
में जगह का मिलना कितना कठिन है। पचास डालर को

चौकीदार के लिए बहुत होती है, वह खुद भी किसीको नहीं बताएगा।

दस मिनट बीत गए। हम तीनों की आखें पहाड़ की चोटी पर स्थित मकान पर लग गईं। सैकण्ड पर सैकण्ड गुजरते जा मगर वह सिगनल नहीं आ रहा था जिसका हमें इन्तज़ार पसीना मेरे चेहरे से छूटने लगा—मैंने घबराकर आना की देखा। एकाएक आना का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। मैंने निगाह फेरकर ऊपर देखा।

दूर ऊपर मकान की एक खिड़की से रोशनी चमक रही और बुझ रही थी। चमक रही थी और बुझ रही थी।

"सिगनल आ गया।" आना खुश होकर बोली, "वे सुरक्षित हैं।"

मैं छलांग मारकर लाच से बाहर निकल आया। मैंने विक्कि हाथ मिलाया। आना ने मेरे गाल पर चुम्बन लिया। फिर विक्की की तरफ बढ़कर कहा,

"मुझे ऊपर तक जाने में पन्द्रह-बीस मिनट लगेंगे। पन्द्रह-बी मिनट में और उसकी मां से बातचीत करने में, कोई चालीस मिन के बाद तुम्हें सैरियन का सिगनल दूंगा। उसके बाद तुम दोनं जा सकते हो।"

मैंने हाथ हिलाकर दोनों को सलाम किया और ज़ीने पर चढ़ने लगा।

पत्थर की सीढ़ियां पर चढ़ते-चढ़ते जब मैं मकान के करीब पहुंचा तो दरवाज़ा खोलकर मे भागती हुई मेरे करीब आई और मुझे जल्दी से दरवाज़े के अन्दर से जाकर मुझसे लिपटकर सिम-किया ले-लेकर रोने लगी। उसका सारा शरीर भय से कांप रहा था और उसका कांपता हुआ नर्म व नाज़ुक शरीर मुझसे लिपट-लिपटकर फरियाद कर रहा था:

"घबराओ नहीं, डरो नहीं।" मैंने उसके शरीर को और भी ज़ोर से अपने साथ चिपटा लिया और उसकी पीठ पर हौले-हौले थपकियां देकर बोला, "मैं आ गया हूं, और अब कोई खतरा नहीं है। अब हम दोनों तुम्हारी मां को अपने साथ लेकर यहां से चले जाएंगे। और कलकत्ते में पहुंचकर एक नया जीवन आरम्भ करेंगे।"

थर-थर वह मेरी बाहों में कांप रही थी। एकाएक उसने आंसुओं से भीगा हुआ अपना चेहरा उठाया और मेरी तरफ देखते हुए बिलखकर बोली, "वह मेरी मां को ले गए हैं!"

"क्या कहती हो!" मैं हैरत से चीखा।

वह धीरे-धीरे पागलपन के भाव से सिर हिलाने लगी। हौले-हौले सिर हिलाते हुए भाव-हीन स्वर में कहने लगी, "वह ले गए हैं मेरी बूढ़ी मां को" कहने लगे अगर तुम अरविन्द मामी को पकड़वा दोगी तो हम तुम्हारी मां तुमको वापस कर देंगे। वरना उसे मार डालेंगे।"

"कब...? कैसे...? क्योंकर...?" मैं बिलकुल बौखला गया था।

वह अपने आंसू पोंछकर बोली, "अन्दर चलो...मैं सब बताती हूं...गलती मेरी है।"

वह वापस घर के अन्दर चलने लगी। पीछे-पीछे मैं चलने लगा। वीरान-उजाड़ कमरे, वीरान-उजाड़ दिल, भाय-भाय करता हुआ वातावरण, मेरा दिल बैठा जा रहा था। आंखों के आगे तिरमिरे-से नाचने लगे थे। इतना आशा के विरुद्ध यह सब कुछ क्या हो गया? कैसे हो गया सब कुछ? मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

मैं के कमरे में आकर मैं सिर पकड़कर एक कुर्सी पर बैठ गया, कोहनियां मेज़ पर टिका दीं।

"क्या चौकीदार गलत आदमी साबित हुआ?" मैंने पूछा।

"नहीं चौकीदार पर तो मुझे शक नहीं है।" मैं बोली, "कम से कम शुरू में तो नहीं थी। चार दिन से हम यहां छिपे बैठे

है। बाहर बरामदे तक नहीं जाते। रात को रोशनी भी क
तो सब दरवाजे बन्द करके—मकान के पिछले भाग में। कि
रोशनी बाहर सड़क पर न पहुंचे। जैसी-जैसी सावधानी तुमने क
हमने सब बरती।"

"फिर तो चौकीदार के सिवाय और कोई नहीं हो

"नहीं, चौकीदार नहीं है।"

"क्या समुन्दर पर घूमने तो नहीं गई ? मुमकिन
किसीने देख लिया हो।"

"नहीं, तट पर तो एक बार भी नहीं गई।"

"तुम्हारी मा ?"

"वह भी नहीं ···।"

मेरी निगाह में मकान का नक्शा घूम गया। सड़क से
एक बड़े बाग में यह मकान था एक ऊंची कुर्सी पर। चा
पत्थर के ऊंचे-ऊंचे जीने। जीना चढ़कर चारों तरफ छता
बराडा। निचली मंजिल में एक बड़ा हॉल और चार कमरे,
की मंजिल में छह कमरे। सब खाली, सिवाय ऊपर की मंजिल
पीछे के एक कमरे में, जहां दोनों मां-बेटी पिछले चार दिन से
कर रहती थीं, चौकीदार दोनों वक्त खाना पकाता था और उन
की हर चीज पहुंचाता था। पिछले कमरे की खिड़कियां समुन्दर
तरफ खुलती थीं। निचली मंजिल के चौफेर बराडे में चारों तर
लकड़ी के खम्भे थे। बड़े-बड़े, मोटे और खूबसूरत रंगों से सजे हुए
पैगोडा टाइप की छः कोने वाली छत। सड़क की ओर वाले बरान
के सामने बाग था और बांसों के सुन्दर झुण्ड। चारों तरफ दूर
दूर तक कोई मकान नहीं था सिर्फ सड़क के उस पार मकान के सामने
एक पेट्रोल पम्प था। मगर बाग के चारों तरफ ऊंची दीवार होने
की वजह से वह भी नजर नहीं आता था।

"बाग के कुएं का पानी मीठा नहीं है।" मैं बोली, "नमकीन
[illegible]।" चौकीदार हमारे पीने के लिए पानी पेट्रोल पम्प
[illegible] नहीं हो सकती, क्योंकि वह खुद

अपने पीने का पानी भी पेट्रोल पम्प से लाता है। और इस कन्ट्री हाउस के मालिक और उसके दोस्त जब पिकनिक पर आते हैं तो वह अपना पानी खुद अपने साथ हांगकांग से लाते हैं। ऐसा चौकीदार ने मुझे खुद बताया था।"

"तो ?"

"तो आज सुबह चौकीदार को हांगकांग अपने किसी काम से जल्दी जाना था। वह हमें नाश्ता खिलाकर और लंच तैयार करके उसे हाट-केस में बन्द करके चला गया। पेट्रोल पम्प से पानी लाना भूल गया। हमे भी उससे पानी मगाना याद न रहा। उसके जाने के बाद प्यास लगी तो देखा पानी नहीं है। अब क्या करें ? बैठ रहे। मगर जब अम्मां बेहाल होने लगी प्यास से, और चौकीदार भी नहीं आया तो मैं खुद बर्तन लेकर बाहर सड़क पर निकल गई। और पेट्रोल पम्प से पानी लाई। वहा दो-तीन आदमियों ने मुझे देख लिया। सिर से पांव तक घूर-घूरकर देख रहे थे। मैंने कोई परवाह नहीं की। क्योंकि मुझे खूब मालूम है, सभी मुझे घूर-घूरकर देखते हैं। मुड़-मुड़कर भी देखते हैं, मैं क्या करूं।"

"बस अपनी तारीफ रहने दो। आगे बताओ क्या हुआ ?"

"उस वक्त तक तो कुछ नहीं हुआ। मैं पानी लेकर वापस आ गई। अम्मा ने पानी पिया, जान में जान आई। कोई सात बजे के करीब चौकीदार भी वापस आ गया, उसे जब हमने पानी के बारे में बताया, तो बेचारे ने बहुत-बहुत माफी चाही। कोई आठ बजे के करीब हमारे गैंग के लोग आ गए। कैसे आ गए ? किसने उन्हें खबर दी ? मैं नहीं जानती। आते ही उन्होंने मुझे बुरा-भला कहा, कोसा, गाली दी। चांटे मारे। मैंने अपनी बेगुनाही का वास्ता दिया। मैंने कहा, मैं जबरदस्ती यहां लाई गई हूं, मेरा कोई कसूर नहीं है। मगर वह लोग नहीं माने, मेरी मां को पकड़कर ले गए। मैं बहुत चीखी-चिल्लाई, गिड़गिड़ाई, हाथ-पांव जोड़े मगर किसी तरह नहीं माने। गोगो कार्ड का सहायक आया था। फ़ग फ़ंग मुझपर मरता है, मुझसे शादी करना चाहता है।

वह न होता तो उन लोगों ने शायद मुझे जान से मार दिया होता और साथ में मेरी मां को भी। मगर फग के कहने पर उन्होंने मुझे छोड़ दिया, मगर मेरी मां को ले गए।"

"जरूर वहां चौकीदार उनका मुखबिर (भेदिया) रहा होगा।" मैंने सोचते हुए उससे कहा, "वही सुबह हागकाग गया, शाम के सात बजे वापस आया। आठ बजे वह लोग आ गए।"

"नहीं। चौकीदार पर तुम बिला वजह शक कर रहे हो। वह जो कोई भी होगा, सामने के पेट्रोल पम्प वालों में से कोई होगा। चौकीदार बिलकुल बेगुनाह है।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो?"

"क्योंकि जब वह मेरे चिल्लाने-गिड़गिड़ाने के बावजूद मेरी मां को घसीटकर ले जाने लगे तो चौकीदार ने बहुत विरोध किया, बल्कि झगड़ा भी किया। मुझे चाकू लेकर उनसे लड़ पड़ा।"

"यह सब दिखावा था, मे। तुम सच बड़ी भोली हो। चौकीदार ने यह सारा ढोंग अपनी निर्दोषता जताने के लिए किया होगा, कि कहीं मामला खुल जाने पर वह कानून की लपेट में न आ जाए।"

मे कुछ नहीं बोली पर हाथ पकड़कर मुझे बाहर के कमरे में ले गई। एक कोने में चौकीदार की लाश पड़ी थी, उसके गैंग वालों ने गोली से घात कर दिया था। लाश के चारों तरफ चोट के निशान थे।

मैं दरवाजा खोलकर बरामदे में जाने लगा कि मे ने मुझे हाथ से पकड़ लिया और कठोरता से पीछे की तरफ धकेलते हुए बोली, "बाहर मत जाओ।"

"क्यों?"

"बाहर वह तुमको देख सकते हैं।"

"क्या वह लोग बाहर हैं?"

"हो सकता है।" मे बोली, "मुमकिन है उन्होंने चारों तरफ से मकान को घेर रखा हो। तुम्हारा बाहर जाना खतरे से खाली नहीं है।"

उसकी दलील ठीक थी। मैं पीछे हट गया। फिर अन्दर के

कमरे में चला आया। कुछ देर टहलता रहा। फिर मैंने पूछा, "मॉम ने जाते वक्त क्या कहा तुमसे ?"

"यही कहा, अगर अपनी मां की जान प्यारी हो तो अरविन्द स्वामी को हमारे हवाले कर दो।"

"तुमने क्या कहा ?"

"क्या कहती ? बोली नहीं···वह मेरी मां को घसीटकर ले गए···।" वे सिसककर बोली।

फिर एकदम मुझसे लिपट गई और ज़ोर से चीखकर बोली, "मैं कभी तुमको उन लोगों के हवाले नहीं करूंगी। चले जाओ, अरविन्द चले जाओ। जिस रास्ते से तुम यहां तक पहुंचे हो, उसी रास्ते से वापस चले जाओ। मुझे भूल जाओ। कमनसीब के भी जिन्दगी में खुशी नहीं लिखी है···।"

"हम दोनों उसी रास्ते से जा सकते हैं।" मैंने धीमे से कहा, "समुन्दरी रास्ता खुला है। मैं अभी उधर ही से आया हूं। अपना मोटर लांच तट पर अभी तक खड़ा है मेरा, मैं तुमको जिन्दा सही-सलामत यहां से ले जा सकता हूं। हम दोनों कलकत्ते पहुंचकर नई जिन्दगी शुरू कर सकते हैं।"

"कैसी नई जिन्दगी होगी वह ? हरदम अपने-आपको कोसती रहूंगी मैं। मैं—अपनी मां की कातिल हूं। तुमसे दिल ही दिल में शिकायत करती रहूंगी—कैसे ये हम लोग—हम दोनों ने मिलकर उसकी जान ले ली। जिसने मुझे जन्म दिया, जिसने जिन्दगी-भर मेरे लिए मुसीबतें सहीं···जिसने रातें आंखों में काट दीं और तुम्हें मौत से बचा लिया···अरविन्द···मैं नहीं जा सकती···अब तुम्हारे और मेरे बीच हमेशा मेरी मां की छाया रहेगी और हम कभी खुश न रह सकेंगे।"

फिर एकाएक वह घबराकर बोली, "फग फिर आने को गया है। कहता था, रात को किसी वक्त भी आ जाऊंगा। तुम्हारी घात में लगे होंगे। मुमकिन है ... अभी पीछा करें। दस मोटर लांच वह लोग ला सकते हैं। अभी

अप्रैल···मेरी जान, मेरे डार्लिंग, भाग जाओ। खुदा के लिए, वापस चले जाओ। अलविदा, अलविदा···।" मे की हिचकियां बंध गईं। और वह मुझे पागलों की तरह चूमती जा रही थी। "अलविदा मेरे अप्रैल···मेरी ज़िंदगी भी तुम्हें मिले।"

मेरा सारा शरीर कांपने लगा। गला रुंध गया। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे अपने-आपसे अलग किया।

"लालटेन किधर है?"

"अन्दर बाथरूम में पड़ी है।"

मैं बाथरूम के अन्दर चला गया। लालटेन की बत्ती नीची थी और बहुत कम रोशनी उसमें से निकल रही थी। बाथरूम की ऊंची-ऊंची दीवारों पर लम्बे-लम्बे काले और भयानक साये नाच रहे थे। मैंने घड़ी देखी, चालीस मिनट गुज़र चुके थे। मैंने बत्ती ऊंची की। जलती लालटेन को लेकर एक मेज़ पर चढ़ गया। मेज़ पर कुर्सी रखी और कुर्सी पर चढ़कर मैंने लालटेन को उसी रोशनदान के करीब रखा जिसकी रोशनी बाहर समुन्दर में दिखाई देती थी।

सिगनल देने के बाद मैंने मे का हाथ पकड़ा और पिछले जीने से निचली मंज़िल पर उतरकर हम मकान के अन्दर ही अन्दर, जीने से उस दरवाज़े तक पहुंच गए जो समुन्दर की ओर खुलता था।

बहुत धीरे से किसी प्रकार की आवाज़ किए बिना मैंने वह दरवाज़ा खोला।

दूर नीचे समुन्दर में मोटर लांच वापस जा रहा था। रात के उदास सन्नाटे को तोड़ती हुई मुझे जिमी ग्रे के गिटार की आवाज़ सुनाई देने लगी। मैं अपना सिर को मोटर लांच चलाते हुए देख सकता था। उसके बाल हवा में बिखरकर बार-बार हवा में झूमते थे।

"यह तुमने क्या किया?" मे धक से रह गई, "तुमने मोटर लांच वापस भेज दी।"

"कर्तव्य तो कर्तव्य है।" मैंने धीमे से कहा, "उन दोनों का बचाना मेरा पहला कर्तव्य है, क्योंकि माइक्रो फिल्में उनके पास हैं—उनको

खतरे से बचाना मेरा पहला कर्तव्य था वह मैंने कर दिया…"
विस्की का स्वर वातावरण में गूंजने लगा।
यह तुमने क्या कर दिया ?—यह तुमने क्या कर दिया ?…
मे की आवाज मुश्किल से सुनी जा सकती थी। वह आश्चर्यचकित खड़ी थी। फटी-फटी आंखों से मेरी तरफ देख रही थी।
"अन्दर चलो।" मैं उसकी कमर में हाथ डालकर उसे अन्दर ले जाने के लिए तैयार करने लगा। अब जबकि सब कुछ हो गया था, मेरे दिल में किसी प्रकार की शंका या झिझक न थी। मुझे मालूम था, मुझे क्या करना है।
अन्दर जाकर मैंने सारे कमरे रोशन कर दिए। सारे झाड़-सारे फानूस, सारी मोमबत्तियां, सब लालटेनें—अब कहीं पर कोई अंधेरा न था। कोई काला साया न था। यह कन्ट्री हाउस एक फूल की तरह जगमगा रहा था।
"तुम क्या पागल तो नहीं हो गए अप्रैल ?" मे का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था।
मैंने कहा, "मे—अप्रैल और मे का तो सदा से साथ रहा है। फिर मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूं। जाओ, अन्दर के कमरे में और वही कपड़े पहन के आओ जो तुमने उस दिन पहन रखे थे जिस दिन तुमने मुझे खरीदा था। वह कपड़े हैं तुम्हारे पास इस वक्त ?"
"हैं तो सही। मगर यह क्या मूर्खता है ?" मे झुंझलाई।
"तुम पहन के तो आओ।"

उस दिन की तरह मे वही लिबास पहन के आई। मैंने कहा:
"उस दिन की तरह आज भी तुम मुझे खरीदोगी।"
"यह क्या मजाक है ?"
"मजाक नहीं है, सच है। बिल्कुल सच है मे। उस दिन मैंने अपना शरीर तुम्हारे हाथ बेचा था। आज अपनी आत्मा बेचता हूं ताकि कुछ बाकी न रह जाए।" मैंने उसे अपनी बाहों में लेकर

[illegible] जानती हो, मगर तुम्हारी मुस्कराहट है। मुस्कराहट [illegible]
[illegible] समझाती रहती। कहने में होती भी समझ आती। [illegible]
नहीं आयी था, और आकर तुम्हारा सिंगार करती। मेरी [illegible]
तुम्हारी बनाए देती। [illegible] होठों पर [illegible]। तुम्हारी
मांग में सिन्दूर भरती। अपना सिर झुकाकर मुझे अपने [illegible]
खिले चेहरे को आरसी में देखने का निमन्त्रण देती।

"मैं नहीं समझ पाती तुम क्या कह रहे हो ?"

"मैं तुमसे मुहब्बत कर रहा हूं।"

कोई तीन बजे के करीब बाहर सड़क की ओर से शोर उठने लगा। अर्लीन और मैं आधी निद्रा में एक-दूसरे की बाहों में सो रहे थे या जाग रहे थे—खुद उन्हें भी कुछ मालूम नहीं था। वक्त का एहसास मिट गया था।

शोर सुनते ही वे हड़बड़ाकर उठ बैठी। भयभीत निगाहों से दरवाजे की तरफ देखने लगी।

मैं भी एक अंगड़ाई ले के उठ खड़ा हुआ। दरवाजे के ऊपर रोशनदान से झांककर देखा।

वह लोग सड़क की दीवार फलांगकर आ चुके थे। दो-दो, तीन-तीन करके तीस-चालीस आदमी जमा हो गए थे। सबके पास शस्त्र थे। रिवाल्वर, रायफल, स्टेनगन, सब कुछ ही था। एक गठीला चीनी जो शायद फय था और उन सबका सरदार था, सबको दो-दो, चार-चार की टोलियों में बांटकर हुक्म देता जाता था।

"वह लोग समुन्दर के किनारे भी आ पहुंचे हैं।" मैं ने चीख मारकर कहा। मैंने मुड़कर देखा। मैं पीछे के रोशनदान तक पहुंच गई थी। मेज पर कुर्सी रखकर और पिछले रोशनदान से नीचे [illegible] और देख रही थी।

"[illegible] मोटर लांच लेकर पिछली सीढ़ियों से आ रहे हैं।"

उठकर अपने कपड़े झाड़े। फिर अपने बालों में कंघी

ने लगा। कभी करके मैंने अपने करीब लड़की आश्चर्यचकित में गे
हा।

"आओ, मुझे आखिरी बार प्यार कर लो।"

"क्या—क्या—क्यों ?" वह एकदम ठिठकी।

"क्योंकि आज रात तुम मेरी बीवी थीं। और अब तुम विधवा होनेवाली हो।"

मैंने होंठ से उसके बालों को चुम्बन दिया। और बाहर के दरवाज़े की तरफ बढ़ने लगा। एकाएक वे मेरी तरफ दौड़ी। दोनों हाथों से उसने मेरी कमर को पीछे से पकड़ लिया।

"नहीं, नहीं—मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी।"

"कर्तव्य तो कर्तव्य है। और मुहब्बत मुहब्बत है।" मैंने उससे कहा, "जो कर्तव्य ने मुझसे कहा, वह मैंने पूरा कर दिया। अब जो मुहब्बत मुझसे कहती है, उसे मुझे पूरा करने दो। मेरे रास्ते से हट जाओ।"

"नहीं, नहीं···।" वह और भी ज़ोर से मुझसे लिपट गई।

"मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता था, और तुम अपनी मां को छोड़कर मेरे साथ नहीं आ सकती थीं। इसलिए जो हुआ वह ठीक हुआ। और जो अब होने जा रहा है वह भी ठीक होने जा रहा है।"

"हरगिज़ नहीं···हरगिज़ नहीं···मैं तुम्हें बाहर नहीं जाने दूंगी। आने दो उनको अन्दर।" एकाएक वह निडर होकर बोली, "और हम दोनों को मार डालने दो उन्हें।"

"तुम जिन्दा रहोगी। तुम्हारी मां भी मिल जाएगी तुम्हें। और फिर किसी अप्रैल के दिन सफेद बादलों तले तुम किसी और को प्यार भी करोगी—अलविदा मेरी जान···!"

वह बिलख-बिलखकर रो रही थी। जितना मैं स्वयं को उससे छुड़ाने की कोशिश करता उतना ही वह मुझसे लिपटती जाती। निचली मंज़िल पर कदमों की आवाज़ सुनाई देने लगी थी। मैं ज़ोर लगाकर दरवाज़े के करीब पहुंच गया। कोमल शरीर वाली में के अन्दर जैसे दो आदमियों की ताकत आ गई थी। अब

मेरे सामने दरवाज़े पर हाथ फैलाए खड़ी थी।

"नहीं जाने दूंगी। नहीं जाने दूंगी। मैं भी तुम्हारे साथ मरूंगी।"

एक झटका और एक धक्का और एक तमाचा मारकर मैंने मैं को दरवाज़े से अलग किया। वह मेरा तमाचा खाकर नीचे फर्श पर जा गिरी। उसी क्षण मैं कमरे से बाहर निकल गया और पलटकर दरवाज़े को बाहर से अच्छी तरह बन्द कर लिया।

अरविन्द माली बाहर बराडे में कुछ क्षणों के लिए खड़ा रहा। उसने दो-तीन गहरे सांस लिए। अपने कधे फैलाए। फिर बड़े मज़बूत कदमों से जीने पर चलता हुआ नीचे उतरने लगा।

चारों तरफ मौत की सी खामोशी थी।

अब उसे कोई नज़र नहीं आता था। शायद वह लोग दो-दो चार-चार की टुकड़ियों में भारी-भरकम स्तम्भों के पीछे छिप गए थे। पेड़ों के पीछे या बांस के झुण्डों में। कहीं भी नज़र से ओझल किसी जगन में समा गए थे।

खट-खट करता हुआ वह ऊपर से नीचे की मंज़िल में आया। नीचे की मंज़िल से निकलकर बाहर के बराडे में आया। आगे-पीछे कुछ न देखते हुए वह बराडे से बाहर सीढ़ियों से उतरने लगा जिसके करीब बांस के झुण्ड खड़े थे।

एकाएक ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, चारों तरफ से गोलियों की बाड़ सुनाई दी। अरुण माली का बदन एक क्षण के लिए हवा की लपेट में आए हुए पत्ते की तरह कांपा, फिर एकदम स्थिर और स्तब्ध हो गया। जैसे किसी गोली का उसपर कोई प्रभाव न पड़ा हो। पहले तो जैसे कभी न खत्म होनेवाले क्षण के लिए वह सीढ़ियों पर खड़ा नज़र आया फिर एकदम उसका बदन लड़खड़ा गया और वह ऊपर की मंज़िल से आनेवाली एक करुण चीख के साथ पत्थर की सीढ़ियों से नीचे भड़भड़ाकर बांस के एक झुरमुट पर गिरकर ढेर हो गया।

० ० ०